राम चरित मानस तुलसीदासकृत
हिन्दी भाषा॥ जीवनलाल कृत लिखित
चैत्र शुक्ल षष्ठमी १८६१ बि० लि०
मिश्र पृ० ल० गं० २ पं० प्रे० पु०

उत्तरकांड पत्र ६५

उं श्रीगणेशायनमः॥श्लोक॥केकीकंठाभनीलंसुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिन्हं॥शोभाढ्यं
१ पीतवस्त्रंसरसिजनयनंसर्वदासुप्रसन्नं॥पाणौनाराचचापंकपिनिकरयुतंबंधुनासेव्य
मानं॥नौमीड्यंजानकीशंरघुवरमनिशंपुष्पकारूढरामं॥१॥कोसलेंद्रपदकंजमंजुलौ॥को
मलावजमहेशवंदितौ॥जानकीकरसरोजलालितौ॥चिंतकस्यमनभृंगसंगिनौ॥२॥कुंददइंदु
दरगौरसुंदरं॥अंबिकापतिमभीष्टसिद्धिदं॥कारुणीककलकंजलोचनं॥नौमिशंकरमनं
गमोचनं॥३॥दोहा॥रहाएकदिनअवधिकरअतिआरतपुरलोग॥जहँतहँसोचहिंनारि
नरकृसतनरामवियोग॥सगुनहोहिंसुंदरसकलमनप्रसन्नसबकेर॥प्रभुआगमनजना
वजनुनगररम्यचहुँफेर॥कौसल्यादिमातुसबमनअनंदअसहोइ॥आयउप्रभुश्रिअनु १
जजुतकहनचहतअबकोइ॥भरतनयनभुजदछिनफरकतबारहिंबार॥जानिसगुनमन

हरषअतिलोगोकनविचार॥१॥ चौपाई॥ रहेउएकदिनअवधिअधारा॥ समुझतमनदु
षभएउअपारा॥ कारनकवननाथनहिआएउ॥ जानिकुटिलकिधौंमोहिबिसराएउ॥ अ
हहधन्यलछिमनवडभागी॥ रामपदारविंदुअनुरागी॥ कपटीकुटिलमोहिप्रभुचीन्हा॥ ता
तैंनाथसंगनहिलीन्हा॥ जौंकरनीसमुझैप्रभुमोरी॥ नहिनिस्तारकलपसतकोरी॥ जनअवगुन
प्रभुमाननकाउ॥ दीनवंधुअतिमृदुलसुभाउ॥ मोरेजियभरोसदृढसोई॥ मिलिहहिंरामस
गुनसुभहोई॥ वीतेंअवधिरहहिंजौंप्राना॥ अधमकौनजगमोहिसमाना॥ दोहा॥ रामविरह
सागरमहँभरतमगनमनहोत॥ विप्ररूपधरिपवनसुतआइगएउजनुपोत॥ वैठेदेखिकुसास
नजटमुकुटकृसगात॥ रामरामरघुपतिजपतश्रवतनयनजलजात॥१॥ देषतहनूमानअति
हरषेउ॥ पुलकिगातलोचनजलवरषेउ॥ मनमहँवहुतभाँतिसुखमानी॥ वोलेउश्रवनसुधा

उ० समबानी॥ जासुबिरहसोचहुदिनराती॥ रटहुनिरंतरगुनगनपाती॥ रघुकुलतिलकसुज
२ नसुषदाता॥ आएउकुसलदेवमुनित्राता॥ रिपुरनजीतिसुजससुरगावत॥ सीतासहितअ
नुजप्रभुआवत॥ सुनतबचनबिसरेसबदूषा॥ त्रिषावंतजिमिपाइपियूषा॥ कोतुम्हतातक
हांतेआए॥ मोहिपरमप्रियबचनसुनाए॥ मारुतसुतमैंकपिहनुमाना॥ नाममोरसुनुकृपा
निधाना॥ दीनबंधुरघुपतिकरकिंकर॥ सुनतभरतभेटेउउठिसादर॥ मिलतप्रेमनहिंह
दयसमाता॥ नयनश्रवतजलपुलकितगाता॥ कपितवदरससकलदुषबीते॥ मिलेआजु
मोहिरामपिरीते॥ बारबारबूझीकुसलाता॥ तोकहुंदेउंकहासुनुभ्राता॥ यहसंदेससरिसज
गमाहीं॥ करिबिचारदेषेउंकछुनाहीं॥ नाहिनतातउरिनमैंतोही॥ अबप्रभुचरितसुनावहु २
मोही॥ तबहनुमंतनाइपदमाथा॥ कहेसकलरघुपतिगुनगाथा॥ कहुकपिकबहुंकृपाल

गुसांई सुमिरहि मोहि दास की नाई॥ छंद॥ निज दास ज्यौं रघुबंसभूषन कबहुं मम सुमि
रन करॺो॥ सुनि भरत बचन बिनीत अति कपि पुलकित तन चरनन्हि परॺो॥ रघुबीर निज मुख जा
सु गुन गन कहत अग जग नाथ जो॥ काहे न होहिं बिनीत परम पुनीत सद गुन सिंधु सो॥ दोहा
राम प्रान प्रिय नाथ तुम्ह सत्य बचन मम तात॥ पुनि पुनि मिलत भरत सुनि हरष न हृदय स
मात॥ सोरठा॥ भरत चरन सिर नाइ तुरित गयो कपि राम पहिं॥ कही कुसल सब जाय हरषि
चले उ प्रभु जान चढ़ि॥ ३॥ हरषि भरत कोसलपुर आए॥ समाचार सब गुरहि सुनाए॥ पुनि मं
दिर महं बात जनाई॥ आवत नगर कुसल रघुराई॥ सुनत सकल जननी उठि धाई॥ कहि प्र
भु कुसल भरत समुझाई॥ समाचार पुरबासिन्ह पाए॥ नर अरु नारि हरषि सब धाए॥ दधि दूर्बा
रोचन फल फूला॥ नव तुलसी दल मंगल मूला॥ भरि भरि हेम थार भामिनी॥ गावत चलीं सिंधु

उ० ३ गामिनी॥ जे जैसेहिं तैसेहिं उठि धावहिं॥ वालवृद्ध कहँ संग न लावहिं॥ एक एकन्ह कहँ बू
झहिं भाई॥ तुम्ह देषे दयाल रघुराई॥ अवधपुरी प्रभु आवत जानी॥ भई सकल सोभा कै षानी
वहै सुहावन त्रिविध समीरा॥ भइ सरजू अति निर्मल नीरा॥ दोहा॥ हरषित गुर परिजन अ
नुज भूसुर वृंद समेत॥ चले भरत मन प्रेम अति सन्मुष कृपानिकेत॥ वहुतक चढी अटारि
न्ह निरषहिं गगन विमान॥ देषि मधुर सुर हरषित करहिं सुमंगल गान॥ राका ससि रघुपति पु
बान री सिंधु देषि हरष॥ वढेउ कोलाहल करत जनु नारि तरंग समान॥४॥ इहां भानुकुल कमल दि
वाकर॥ कपिन्ह देषावत नगर मनोहर॥ सुनु कपीस अंगद लंकेसा॥ पावन पुरी रुचिर यह दे
सा॥ जद्यपि सब वैकुंठ वषाना॥ वेद पुरान विदित जगु जाना॥ अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोउ॥
यह प्रसंग जानै कोउ कोउ॥ जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि॥ उत्तर दिसि वह सरजू पावनि॥ ३

जामज्जनतेविनहिप्रयासा॥ममसमीपपावहिंनरवासा॥अतिप्रियमोहिइहाँकेवासी॥ममधा
मदापुरीसुषरासी॥हरषेसवकपिसुनिप्रभुवानी॥धन्यअवधजोरामवषानी॥दोहा॥आवत
देषिलोगसवकृपासिंधुभगवान॥नगरनिकटप्रभुप्रेरेउउतरेभूमिविमान॥उतरिकहेउ
प्रभुपुष्पकहितुम्हकुवेरपहिजाहु॥प्रेरितरामचलेसोहरषविरहअतिताहु॥५॥आएभ
रतसंगसवलोगा॥कृसतनश्रीरघुवीरवियोगा॥वामदेववसिष्ठमुनिनायक॥देषेप्रभुमहि
धरिधनुसायक॥धाइधरेगुरचरनसरोरुह॥अनुजसहितअतिपुलकतनोरुहँ॥भेटिकुसल ६
वूझीमुनिराया॥हमरेकुसलतुम्हारिहिदाया॥सकलद्विजन्हमिलिनाएउमाथा॥धरमधुरं
धररघुकुलनाथा॥गहेभरतपुनिप्रभुपदपंकज॥नमतजिन्हहिसुरमुनिसंकरअज॥परेभू
मिनहिउठतउठाए॥वरकरिकृपासिंधुउरलाए॥स्यामलगातरोमभएठाढे॥नवराजीव

३० नयनजलवाढे॥छंद॥ राजीवलोचनश्रवतजलतनललितपुलकावलिवनी॥ अतिप्रेम
४ हृदयलगाइअनुजहिमिलेप्रभुत्रिभुवनधनी॥ प्रभुमिलतअनुजहिसोहमोपहिजाति
नहिउपमाकही॥ जनुप्रेमअरुसिंगारतनुधरिमिलेवरपरमालही॥ वूझतकृपानिधि
कुसलभरतहिवचनवेगिनआवई॥ सुनुसिवासोसुखवचनमनतेभिन्नजानजोपावई॥ अ
वकुसलकोसलनाथआरतजानिजनुदरसनदियो॥ वूडतविरहवारीसकृपानिधान
मोहिकरगहिलियो॥ दोहा॥ पुनिप्रभुहरषिसत्रुहनभेटेहृदयलगाइ॥ लछिमनभर
तमिलेतवपरमप्रेमदोउभाइ॥४॥ भरतानुजलछिमनपुनिभेटे॥ दुसहविरहसंभवदु
खमेटे॥ सीताचरनभरतसिरनावा॥ अनुजसमेतपरमसुखपावा॥ प्रभुविलोकिहरषेपुर ४
वासी॥ जनितवियोगविपतिसवनासी॥ प्रेमातुरसवलोगनिहारी॥ कौतुककीन्हकृपालष

रषी॥ अमितरूपप्रगटेतेहिकाला॥ जथाजोगमिलेसबहिकृपाला॥ कृपादृष्टिरघुवीरबिलोकी
किएसकलनरनारिविसोकी॥ छनमहिंसबहिमिलेभगवाना॥ उमामरमयहकाहुनजाना
एहिविधिसबहिसुखीकरिरामा॥ आगेचलेसीलगुनधामा॥ कौसल्यादिमातुसबधाईं॥ नि
रषिवछ्छजनुधेनुलवाईं॥ छंद॥ जनुधेनुवालकवछ्छतजिगृहचरनवनपरवसगईं॥ दिन
अंतपुररुषस्रवतथनहुंकारकरिधावतभईं॥ अतिप्रेमप्रभुसबमातुभेटींबचनमृदुबहुविधि
कहे॥ गईविषमविपतिवियोगभवतिन्हहरषसुखअगनितलहे॥ दोहा॥ भेटेउतनयसुमि
त्रारामचरनरतिजानि॥ रामहिमिलतकैकेईहृदयबहुतसकुचानि॥ लछिमनसबमात
न्हमिलेहरषेआसिषपाइ॥ कैकेईकहुंपुनिमिलेमनकरछोभुनजाइ॥ ७॥ सासुनसबमिली नि
वैदेही॥ चरननिलागिहरषुअतितेही॥ देहिंअसीसबूझिकुसलाता॥ होउअचलतुम्हारअ

उ० ५ हिबाता॥ सकलरघुपतिमुषकमलबिलोकहिं॥ मंगलजानिनयनजलरोकहिं॥ कनकथारआरती गल
उतारहिं॥ बारबारप्रभुगातनिहारहिं॥ नानाभाँतिनिछावरिकरहीं॥ परमानंदहरषउरभरहीं॥
कौसल्यापुनिपुनिरघुबीरहिं॥ चितवतिकृपासिंधुरनधीरहिं॥ हृदयबिचारतिबारहिंबारा॥
कवनभाँतिलंकापतिमारा॥ अतिसुकुमारजुगलमेरेबारे॥ निसिचरसुभटमहाबलभारे॥ दोहा
लछिमनअरुसीतासहितप्रभुहिबिलोकतमातु॥ परमानंदमगनमनपुनिपुनिपुलकित
गातु॥ ५॥ लंकापतिकपीसनलनीला॥ जामवंतअंगदसुभसीला॥ हनुमदादिसबबानरबी
रा॥ धरेमनोहरमनुजसरीरा॥ भरतसनेहसीलब्रतनेमा॥ सादरसबबरनहिंअतिप्रेमा॥ देषि
नगरबासिन्हकैरीती॥ सकलसराहहिंप्रभुपदप्रीती॥ पुनिरघुपतिसबसखाबोलाए॥ मुनि ५
पदलागहुसकलसिषाए॥ गुरबसिष्ठकुलपूज्यहमारे॥ इन्हकीकृपादनुजरनमारे॥ एसब

सषासुनहुमुनिमेरे॥भएसमरसागरकहँबेरे॥ममहितलागिजन्मइन्हहारे॥भरतहुतेमोहिअ
धिकपियारे॥सुनिप्रभुबचनमगनसबभए॥निमिषनिमिषउपजतसुषनए॥दोहा॥कौसल्या
केचरनन्हपुनितिन्हनाएउमाथ॥आसिषदीन्हेहरषितुम्हप्रियममजिमिरघुनाथ॥सुम
नब्रष्टिनभसंकुलभवनचलेसुषकंद॥चढीअटारिन्हदेषहिंनगरनारिनरबृंद॥८॥कंच
नकलसबिचित्रसँवारे॥सबहिंधरेसजिनिजनिजद्वारे॥बंदनवारपताकाकेतू॥सबन्हिबनाए
मंगलहेतू॥बीथींसकलसुगंधसिंचाई॥गजमनिरचिबहुचौकपुराईं॥नानाभाँतिसुमंगलसाजे
हरषिनगरनिसानबहुबाजे॥जहँतहँनारिनिछावरिकरहीं॥देहिंअसीसहरषउरभरहीं॥
कंचनथारआरतीनाना॥जुबतीसजेंकरहिंसुभगाना॥करहिंआरतीआरतिहरकें॥रघुकुल
कमलबिपिनदिनकरकें॥पुरसोभासंपतिकल्याना॥निगमसेषसारदाबखाना॥तेउयहच

उ० श्री

तिन देषि ठगि रहहीं॥ उमा तासु गुन नर किमि कहहीं॥ दोहा॥ नारि कुमुदिनी अवध सर रघुपति बिरह दिनेस॥ अस्त भए बिकसित भईं निरषि राम राकेस॥ होहिं सगुन सुभ बिबिधि बिधि बाजहिं गगन निसान॥ पुर नर नारि सनाथ करि भवन चले भगवान॥ १०॥ प्रभु जानी कैकई लजानी॥ प्रथम तासु गृह गए भवानी॥ ताहि प्रबोधि बहुत सुष दीन्हा॥ पुनि निज भवन गवन हरि कीन्हा॥ कृपासिंधु जब मंदिर गए॥ पुर नर नारि सुषी सब भए॥ गुर बसिष्ठ द्विज लिए बुलाई॥ आजु सुघरी सुदिन सुभदाई॥ सब द्विज देहु हरषि अनुसासन॥ रामचंद्र बैठहिं सिंघासन॥ मुनि बसिष्ठ के बचन सुहाए॥ सुनत सकल बिप्रन्ह अति भाए॥ कहहिं बचन मृदु बिप्र अनेका॥ जग अभिराम राम अभिषेका॥ अब मुनिबर बिलंब नहिं कीजे॥ महाराज कह तिलक करीजे॥ दोहा॥ तब मुनि कहेउ सुमंत्र सन सुनत चले उ हरषाय॥ रथ अनेक बहु बाजि गज तुरत सँ

श्री उ १

वारे उजाय ॥ जहँ तहँ धावन पैठे पुनि मंगल द्रव्य मगाइ ॥ हरष समेत वसिष्ठ पद पुनि सिरु ना
य उआइ ॥ ११ ॥ अवधपुरी अति रुचिर वनाई ॥ देवन्ह सुमन वृष्टि झरि लाई ॥ राम कहा सेवक
न्ह वोलाई ॥ प्रथम सषन्ह अन्हवावहु जाई ॥ सुनत वचन जहँ तहँ जन धाए ॥ सुग्रीवादि तुर
त अन्हवाए ॥ पुनि करुनानिधि भरत हकारे ॥ निज कर राम जटा निरुवारे ॥ अन्हवाए प्रभु ती
नि उ भाई ॥ भगत वछल कृपाल रघुराई ॥ भरत भाग्य प्रभु कोमलताई ॥ सेष कोटि सत सक
हिं न गाई ॥ पुनि निज जटा राम विवराये ॥ गुर अनुसासन मांगि नहाये ॥ करि मज्जन प्रभु भूष
न साजे ॥ अंग अनंग देषि सत लाजे ॥ **दोहा** ॥ : सासुन सादर जानकिहि मज्जन तुरत कराइ ॥ दि
व्य वसन वर भूषन अंग अंग सजे वनाइ ॥ राम वाम दिसि सोभित रमा रूप गुन षानि ॥ देषि
मातु सव हरषीं जन्म सुफल निज जानि ॥ सुनु षगेस तेहि अवसर ब्रह्मा सिव मुनि वृंद ॥ चढि

३०
विमान आए सब सुर देखन सुखकंद ॥ ११ ॥ प्रभु बिलोकि मुनि मन अनुरागा ॥ तुरत दिव्य सिंह
७ सन मागा ॥ रबि सम तेज सो बरनि न जाई ॥ बैठे राम द्विजन्ह सिर नाई ॥ जनकसुता समेत रघुराई
पेषि प्रहर्षे मुनि समुदाई ॥ वेद मंत्र तब द्विजन्ह उचारे ॥ नभ सुर मुनि जय जयति पुकारे ॥ प्रथम
तिलक बसिष्ठ मुनि कीन्हा ॥ पुनि सब विप्रन्ह आयसु दीन्हा ॥ सुत बिलोकि हरषीं महतारी ॥ बा
र बार आरती उतारी ॥ विप्रन्ह दान विविध विधि दीन्हे ॥ जाचक सकल अजाचक कीन्हे ॥ सिं
हासन पर त्रिभुवन साईं ॥ देषि सुरन्ह दुंदुभी बजाईं ॥ छंद ॥ नभ दुंदुभी बाजहिं बिपुल गं
धर्ब किंनर गावहीं ॥ नाचहिं अपछरा बृंद परमानंद सुर मुनि पावहीं ॥ भरतादि अनुज वि
भीषनांगद हनुमदादि समेत ते ॥ गहि छत्र चामर व्यजन धनु असि चर्म सक्ति बिराजते ॥ श्री स ७
हित दिनकर बंस भूषन काम बहु छबि सोहई ॥ नव अंबुधर बर गात अंबर पीत सुर मन मोहई ॥

मुकुटांगदादिबिचित्रभूषनअंगअंगनप्रतिसजे॥अंभोजनयनबिसालउरभुजधन्यनरनि
रखंतिजे॥दोहा॥वहसोभासमाजसुखकहतनवनैखगेस॥बरनैसारदसेसश्रुतिसोरसजानम
हेस॥भिन्नभिन्नअस्तुतिकरिगयेसुरनिजनिजधाम॥वंदीवेषवेदतवआएजहँश्रीराम॥प्रभु
सर्वज्ञकीन्हअतिआदरकृपानिधान॥लखेउनकाहूंमरमकछुलगेकरनगुनगान॥१२॥
छंद॥ जयसगुननिर्गुनरूपरूपअनूपभूपसिरोमने॥दसकंधरादिप्रचंडनिसिचरप्रवल
खलभुजवलहने॥अवतारनरसंसारभारविभंजिदारुनदुखदहे॥जयप्रनतपालदयालप्रभु
संजुक्तसक्तिनमामहे॥तवविषममायावससुरासुरनागनरअगजगहरे॥भवपंथभ्रमतअ
मितदिवसनिसिकालकर्मगुननिभरे॥जेनाथकरिकरुनाविलोकेत्रिविधिदुखतेनिर्वहे॥
भवखेदछेदनदछहमकहुंरछरामनमामहे॥जेज्ञाननमानविमत्ततवभवहरनिभक्तिनआदरी

ॐ दरी॥ तेपाइसुरदुर्लभपदादपिपरतहमदेषतहरी॥ बिश्वासकरिसबआसपरिहरिदासत

१ वजेहोइरहे॥ जपिनामतवबिनुश्रमतरहिंभवनाथसोसमरामहे॥ जेचरनसिवअजपुज्यर

जसुभपरसिमुनिपत्नीतरी॥ नषनिर्गतामुनिवंदितात्रैलोकपावनिसुरसरी॥ ध्वजकुलिस लि

अंकुसकंजजुतवनफिरतकंटककिनलहे॥ पदकंजद्वंदमुकुंदरामरमेसनित्यभजामहे

अव्यक्तमूलमनादितरुत्वचचारिनिगमागमभने॥ षटकंधसाषापंचवीसअनेकपर्नसुम

नघने॥ फलजुगलविधिकटुमधुरवेलिअकेलिजेहिआश्रितरहे॥ पल्लवतफूलतनवल

नितसंसारविटपनमामहे॥ जेब्रह्मअजमद्वैतमनुभवगम्यमनपरध्यावहीं॥ तेकहहुजा

नहुनाथहमतवसगुनजसनितगावहीं॥ करुनायतनप्रभुसदगुनाकरदेवयहवरमागहीं ८

मनवचनकर्मविकारतजितवचरनहमअनुरागहीं॥ दोहा॥ सबकेदेषतवेदन्हविनती

कीन्हि उदार॥ अंतरध्यान भए पुनि गए ब्रह्मआगार॥ बैनतेय सुनु संभु तब आए जहँ रघुबीर
बिनय करत गदगद गिरा पूरित पुलक सरीर॥१४॥ तोटक॥ जय राम रमारमनं समनं। भवताप
भयाकुल पाहि जनं॥ अवधेस सुरेस रमेस बिभो॥ सरनागत मागत पाहि प्रभो॥ दससीस बिनास
न बीस भुजा॥ कृत दूरि महा महि भूरि रुजा॥ रजनीचर बृंद पतंग रहे॥ सर पावक तेज प्रचंड दहे॥
महि मंडल मंडन चारुतरं॥ धृत सायक चाप निषंग बरं॥ मद मोह महा ममता रजनी॥ तम पुंज
दिवाकर तेज अनी॥ मनुजात किरातन निपात किए॥ मृग लोग कुभोग सरेन हिये॥ हति नाथ अ
नाथन्हि पाहि हरे॥ बिषया बन पावँर भूलि परे॥ बहु रोग बियोगन्हि लोग हये॥ भवदंघ्रि निरा
दर के फल ये॥ भव सिंधु अगाध परे नर ते॥ पद पंकज प्रेम न जे करते॥ अति दीन मलीन दुखी नित
हीं॥ जिन्ह के पद पंकज प्रीति नहीं॥ अवलंब भवंत कथा जिन्ह के॥ प्रिय संत अनंत सदा-

१३० तिन्हके॥ नहिरागनलोभनमाननमदा॥ तिन्हकेसमवैभववाविपदा॥ एहितेतवसेवकहोतमु
५ दा॥ मुनित्यागनजोगभरोससदा॥ करिप्रेमनिरंतरनेमलिये॥ पदपंकजसेवतसुद्धहिये॥ स
ममानिनिरादरआदरही॥ सवसंतसुषीविचरंतमही॥ मुनिमानसपंकजभृंगभजे॥ रघुवी
रमहारनधीरअजे॥ तवनामजपामिनमामिहरे॥ भवरोगमहागदमानअरी॥ गुनसीलकृ
पापरमायतनं॥ प्रनमामिनिरंतरश्रीरमनं॥ रघुनंदनिकंदयद्वंदघनं॥ महिपालविलोकय
दीनजनं॥ दोहा॥ वारवारवरमागौं हरषिदेहुश्रीरंग॥ पदसरोजअनपायनीभक्तिसदास
तसंग॥ वरनिउमापतिरामगुनहरषिगएकैलास॥ तवप्रभुकपिन्हदिवाएसवविधिसुष
प्रदवास॥ १५॥ सुनुषगपतियहकथापावनी॥ त्रिविधितापभवभयदावनी॥ महाराजकरसु ५
भअभिषेका॥ सुनतलहहिंनरविरतिविवेका॥ जेसकामनरसुनहिंजेगावहिं॥ सुषसंपति

नानाविधिपावहिं॥ सुरदुर्लभसुषकरिजगमाहीं॥ अंतकालरघुपतिपुरजाहीं॥ सुनहिंविमुक्त
विरतअरुविषई॥ लहहिंभक्तिगतिसंपतिनई॥ षगपतिरामकथामैंवरनी॥ स्वमतिविलास
त्रासदुषहरनी॥ विरतिविवेकभगतिदृढकरनी॥ मोहनदीकहँसुंदरतरनी॥ नितनवमंगल
कोसलपुरी॥ हर्षितरहहिंलोगसवकुरी॥ नितनइप्रीतिरामपदपंकज॥ सवकेजिन्हहिंन
मतसिवमुनिअज॥ मंगनवहुप्रकारपहिराये॥ द्विजन्हदाननानाविधिपाये॥ दोहा॥ ब्र
ह्मानंदमगनकपिसवके प्रभुपदप्रीति॥ जातनजानेदिवसतिन्हगएमासषटवीति॥ १५॥ विस
रेग्रहसपनेहुंसुधिनांहीं॥ जिमिपरद्रोहसंतमनमाहीं॥ तवरघुपतिसवसषावोलाये॥ आइस
वनिसादरसिरनाए॥ परमप्रीतिसमीपवैठारे॥ भगतसुषदमृदुवचन उचारे॥ तुम्हअतिकी
न्हिमोरिसेवकाई॥ मुषपरकेहिविधिकरौंवडाई॥ तातेमोहितुम्हअतिप्रियलागे॥ ममहि

७० तलागिभवनसुषत्यागे ॥ अनुजराजसंपतिवैदेही ॥ देहगेहपरिवारसनेही ॥ सवममप्रियन
१० हितुम्हहिसमाना ॥ म्रषानकहौंमोरयहवाना ॥ सवकेप्रियसेवकयहनीती ॥ मोरेंअधिकदा
सपरप्रीती ॥ दोहा ॥ अवग्रहजाहुसषासवभजेहुमोहिदृढनेम ॥ सदासर्वगतसर्वहितजा
निकरेहुअतिप्रेम ॥ १६ ॥ मुनिप्रभुवचनमगनसवभये ॥ कोहमकहांविसरितनगाये ॥ एक
टकरहेजोरिकरआगे ॥ सकहिंनकछुकहिअतिअनुरागे ॥ परमप्रेमतिन्हकरप्रभुदेषा ॥
कहाविविधिविधिज्ञानविसेषा ॥ प्रभुसन्मुषकछुकहननपारहिं ॥ पुनिपुनिचरनसरोज
निहारहिं ॥ तवप्रभुभूषनवसनमगाए ॥ नानारंगअनूपसोहाए ॥ सुग्रीवहिप्रथमपहि
राए ॥ वसनभरतनिजहाथवनाए ॥ प्रभुप्रेरितलछिमनपहिराए ॥ लंकापतिरघुपतिमन १०
भाए ॥ अंगदवैठिरहानहिंडोला ॥ प्रीतिदेषिप्रभुताहिनवोला ॥ दोहा ॥ जामवंतनी

लादिसबपहिराए रघुनाथ॥ हियधरिरामरूपसबचलेनाइपदमाथ॥ तबअंगदउठिनाइ
सिरुसजलनयनकरजोरि॥ अतिबिनतीबोलेउबचनमनहुप्रेमरसबोरि॥१८॥ सुनुसर्वज्ञ
कृपासुखसिंधो॥ दीनदयाकरआरतबंधो॥ मरतीबेरनाथमोहिबाली॥ गयोतुम्हारेहिकोछें
घाली॥ असरनसरनबिरदसंभारी॥ मोहिजनितजहुभगतहितकारी॥ मोरेंतुम्हप्रभुगुरपि
तुमाता॥ जाउँकहाँतजिपदजलजाता॥ तुम्हहिबिचारिकहहुनरनाहा॥ प्रभुतजिभवनका
जममकाहा॥ बालकग्यानबुद्धिबलहीना॥ राखहुसरननाथजनदीना॥ नीचटहलग्रह
केसबकरिहौं॥ पदपंकजबिलोकिभवतरिहौं॥ असकहिचरनपरेउप्रभुपाहीं॥ अबज
निनाथकहहुग्रहजाही॥ दोहा॥ अंगदबचनबिनीतसुनिरघुपतिकरुनासींव॥ प्रभु
उठायउरलाएउसजलनयनराजीव॥ निजउरमालबसनमनिबालितनयपहिराइ

ॐ

११ विदाकीन्हिभगवानतववहुप्रकारसमुझाइ॥१७॥भरतम्रनुजसौमित्रिसमेता॥पठवनच
लेभगतकृतचेता॥अंगदहृदयप्रेमनहिंथोरा॥फिरिफिरिचितवरामकीओरा॥वारवारकरि
दंडप्रनामा॥मनअसरहनकहहिंमोहिरामा॥रामविलोकनिवोलनिचलनी॥सुमिरि
सुमिरिसोचतहंसिमिलनी॥प्रभुरुखदेखिविनयवहुभाषी॥चलेउहृदयपदपंकजरा
षी॥अतिआदरसवकपिपहुंचाए॥भाइन्हसहितभरतपुनिआए॥तवसुग्रीवचरनगहि
नाना॥भांतिविनयकीन्हेहनुमाना॥दिनदसकरिरघुपतिपदसेवा॥पुनितवचरनदेषिहौं
देवा॥पुन्यपुंजतुम्हपवनकुमारा॥सेवहुजाइकृपाआगारा॥असकहिकपिसवचलेतुरंता
अंगदकहैसुनहुहनुमंता॥दोहा॥कहेहुदंडवतप्रभुसैंतुम्हहिंकहौंकरजोरि॥वारवाररघु ११
नायकहिसुरतिकराएहुमोरि॥असकहिचलेउवालिसुतफिरिआएउहनुमंत॥तासुप्री

भर तिप्रभुसनकहीमागानँभावंत॥ कुलिसहुचाहिकठोरअतिकोमलकुसुमहुचाहि॥ चि
त्तषगेसरामकरसमुझिपरैकहुकाहि॥१९॥ पुनिकृपाललियोवोलिनिषादा॥ दीन्हेभूष
नवसनप्रसादा॥ जाहुभवनममसुमिरनकरेहू॥ मनक्रमवचनधर्मअनुसरेहू॥ तुम्हमम
सषाभरतसमभ्राता॥ सदारहेहुपुरआवतजाता॥ वचनसुनतउपजासुषभारी॥ परेउच
रनभरिलोचनवारी॥ चरननलिनउरधरिगृहआवा॥ प्रभुसुभावपरिजनन्हिसुनावा॥ र
घुपतिचरितदेषिपुरवासी॥ पुनिपुनिकहहिंधन्यसुषरासी॥ रामराजवैठेत्रयलोका॥ ह
रषितभएगएसवसोका॥ वैरुनकरकाहूसनकोई॥ रामप्रतापविषमतापोई॥ दोहा॥
वरनाश्रमनिजनिजधरमनिरतवेदपथलोग॥ चलहिंसदापावहिंसुषनहिंभयसोक
वि१ नरोग॥२०॥ दैहिकदै[illegible]कभौतिकतापा॥ रामराजनहिंकाहुहिव्यापा॥ सवनरकरहिंप

उ० रस्पर प्रीती॥ चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥ चारिउ चरन धर्म जग माहीं॥ पूरि रहा सपने
१२ हुँ अघ नाहीं॥ राम भगति रत सब नर नारी॥ सकल परम गति के अधिकारी॥ अल्प मृत्यु न
हिं कवनिउ पीरा॥ सब सुंदर सब बिरुज सरीरा॥ नहिं दरिद्र कोउ दुषी न दीना॥ नहिं कोउ
अबुध न लछन हीना॥ सब निर्दंभ धर्म रत पुनी॥ नर अरु नारि चतुर सब गुनी॥ सब गुनग्य
सब पंडित ग्यानी॥ सब कृतग्य नहिं कपट सयानी॥ दोहा॥ राम राज नभगेस सुनु सचरा
चर जग माहिं॥ काल कर्म सुभाव गुन कृत दुष काहुहि नाहिं॥ २१॥ भूमि सप्त सागर मेष
ला॥ एक भूप रघुपति कोसला॥ भुअन अनेक रोम प्रति जासू॥ यह प्रभुता कछु बहुत न तासू॥
सो महिमा समुझत प्रभु केरी॥ यह बरनत हीनता घनेरी॥ सोउ महिमा षगेस जिन्ह जानी॥ १२
फिरि एहिं चरित तिन्हहुँ रति मानी॥ सोउ जाने कर फल यह लीला॥ कहहिं महा मुनि

बरदसुसीला॥ रामराजकरसुषसंपदा॥ बरनिनसकैफनीससारदा॥ सबउदारसबपरउप
कारी॥ बिप्रचरनसेवकनरनारी॥ एकनारिब्रतरतसबझारी॥ तेमनबचक्रमपतिहितकारी
दोहा॥ दंडजतिन्हकरभेदजहँनर्तकनृत्यसमाज॥ जीतहुमनहिसुनिअअसरामचंद्रके
राज॥ २३॥ फूलहिंफलहिंसदातरुकानन॥ रहहिंएकसंगगजपंचानन॥ षगमृगसहज
बैरबिसराई॥ सबन्हिपरस्परप्रीतिबढाई॥ गुंजहिंषगमृगनानाबृंदा॥ अभयचरहिंबन
करहिंअनंदा॥ सीतलसुरभिपवनबहमंदा॥ गुंजतअलिलेचलिमकरंदा॥ लताबिटपमा
गेमधुचवहीं॥ मनभावतोधेनुपयश्रवहीं॥ ससिसंपन्नसदारहधरनी॥ त्रेताभइकृतजुग
कैकरनी॥ प्रगटीगिरिन्हबिबिधमनिषानी॥ जगदातमाभूपजगजानी॥ सरितासकलबह
हिंबरबारी॥ सीतलअमलस्वादसुषकारी॥ सागरनिजमरजादारहहीं॥ डारहिंरत्नतट

उ० १३ हिनसरहहीं॥सरसिजसंकुलसकलतडागा॥अतिप्रसन्नदसदिसाविभागा॥दोहा॥बिधु
महिपूरमयूषन्हिरवितपजेतनेहिकाज॥मागेवारिददेहिंजलरामचंद्रकेराज॥२४॥कोटि
न्हवाजिमेधप्रभुकीन्हे॥दानअनेकद्विजन्हकहँदीन्हे॥श्रुतिपथपालकधरमधुरंधर॥
गुनातीतअरुभोगपुरंदर॥पतिअनकूलसदारहसीता॥सोभाखानिसुसीलविनीता॥जान
तिकृपासिंधुप्रभुताई॥सेवतिचरनकमलमनलाई॥जद्यपिग्रहसेवकसेवकिनी॥विपुल
सकलसेवाविधिगुनी॥निजकरग्रहपरिचरजाकरई॥रामचंद्रआयसुअनुसरई॥जेहिवि
धिकृपासिंधुसुषमानइ॥सोइकरश्रीसेवाविधिजानइ॥कौसल्यादिसासुग्रहमाहीं॥सेव
इसवन्हिमानमदनाहीं॥उमारमाब्रह्मादिवंदिता॥जगदंवासंततमनिंदिता॥दोहा॥ १३
जासुकृपाकटाछसुरचाहतचितवनसोइ॥रामपदारविंदरतिकरतिसुभावहिषोइ॥२५॥

सेवहिं सानुकूल सब भाई॥ रामचरन रति अति अधिकाई॥ प्रभु मुख कमल बिलोकत रहहीं॥
कबहुँ कृपाल हमहि कछु कहहीं॥ राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती॥ नाना भाँति सिखावहिं नी
ती॥ हरषित रहहिं नगर के लोगा॥ करहिं सकल दुर्लभ भोगा॥ अहनिसि बिधिहि मनावत सुर
रहहीं॥ श्रीरघुबीर चरन रति चहहीं॥ दुइ सुत सुंदर सीता जाए॥ लव कुस बेद पुरानन्ह गाए॥
दोउ बिजई बिनई गुन मंदिर॥ हरि प्रतिबिंब मनहुँ अति सुंदर॥ दुइ दुइ सुत सब भ्रातन्ह केरे
भए रूप गुन सील घनेरे॥ दोहा॥ ग्यान गिरा गोतीत अज माया मन गुन पार॥ सोइ सच्चिद
नंदघन कर नर चरित उदार॥ २६॥ प्रातकाल सरजू करि मज्जन॥ बैठहिं सभाँ संग द्विज सज्ज
न॥ बेद पुरान बसिष्ठ बखानहिं॥ सुनहिं राम जद्यपि सब जानहिं॥ अनुजन्ह संजुत भोजन क
रहीं॥ देखि सकल जननीं सुख भरहीं॥ भरत सत्रुहन दोनौ भाई॥ सहित पवन सुत उपव

उ०
१४

नजाई॥ बूझहिंबैठिरामगुनगाहा॥ कहहनुमानसुमतिअवगाहा॥ सुनतबिमलगुनअ
तिसुषपावहिं॥ बहुरिबहुरिकरिबिनयकहावहिं॥ सबकेंग्रहग्रहहोहिंपुराना॥ रामचरि
तपावनबिधिनाना॥ नरअरुनारिरामगुनगानहिं॥ करहिंदिवसनिसिजातनजानहिं
दोहा॥ अवधपुरीबासिन्हकरसुषसंपदासमाज॥ सहससेषनहिकहिसकहिंजहंनृप
रामबिराज॥ २७॥ नारदादिसनकादिमुनीसा॥ दरसनलागिकोसलाधीसा॥ दिनप्रतिस
कलअजोध्याआवहिं॥ देषिनगरबिरागबिसरावहिं॥ जातरूपमनिरचितअटारी॥ नानारं
गरुचिरगचढारी॥ पुरचहुंपासकोटअतिसुंदर॥ रचेकंगूरारंगरंगबर॥ नवग्रहनिकरअ
नीकबनाई॥ जनुघेरीअमरावतिआई॥ महिबहुरंगरचितगचकांचा॥ जोबिलोकिमुनि १४
बरमननाचा॥ धवलधामऊपरनभचुंबत॥ कलसमनहुरबिससिदुतिनिंदत॥ बहुमनि

रचित झरोषा भ्राजहीं॥ ग्रह ग्रह प्रति मनि दीप बिराजहीं॥ छंद॥: मनि दीप राजहिं भवन
भ्राजहिं देहली बिद्रुम रची॥ मनि षंभ भीति बिरंचि बिरची कनक मनि मरकत षची॥ सुंदर मनो
हर मंदिरायत अजिर रुचिर फटिक रचे॥ प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट बनाइ बहु बज्रन्हि षचे॥
दोहा॥: चारु चित्रसाला ग्रह ग्रह प्रति लिषे बनाइ॥ राम चरित जे निरष मुनि ते मन लेहिं
चोराइ॥ २८॥ सुमन बाटिका सबहिं लगाईं॥ बिबिधि भाँति करि जतन बनाईं॥ लता ललित ब
हु जाति सुहाईं॥ फूलहिं सदा बसंत कि नाईं॥ गुंजत मधुकर मुषर मनोहर॥ मारुत त्रिबिधि
सदा बह सुंदर॥ नाना षग बालकन्हि जिआए॥ बोलत मधुर उड़ात सुहाए॥ मोर हंस सार
स पारावत॥ भवननि पर सोभा अति पावत॥ जहँ तहँ देषहिं निज परिछाहीं॥ बहु बिधि कू
जहिं नृत्य कराहीं॥ सुक सारिका पढावहिं बालक॥ कहहु राम रघुपति जनपालक॥ राज दु

उ० आर सकल बिधि चारु॥ बीथीं चौहट रुचिर बजारु॥ छंद॥ बाजार रुचिर न बनै बरनत वस्तु
२५ बिनु गथ पाइये॥ जहँ भूप रमानिवास तहँ की संपदा किमि गाइये॥ बैठे बजाज सराफ बनि
क अनेक मनहु कुबेर ते॥ सब सुखी सब सच्चरित सुंदर नारि नर सिसु जरठ जे॥ दोहा॥ उत्त
र दिसि सरजू बह निर्मल जल गंभीर॥ बाँधे घाट मनोहर स्वल्प पंक नहि तीर॥ २८॥ दूरि फ
राक रुचिर सो घाटा॥ जहँ जल पिअहिं बाजि गज ठाटा॥ पनिघट परम मनोहर नाना॥ तहाँ
न पुरुष करहिं अस्नाना॥ राजघाट सब बिधि सुंदर बर॥ मज्जहिं तहाँ बरन चारिउ नर॥ तीर ती
र देवन के मंदिर॥ चहुँ दिसि तिन्ह के उपबन सुंदर॥ कहुँ कहुँ सरिता तीर उदासी॥ बसहिं ग्या
नरत मुनि सन्यासी॥ तीर तीर तुलसिका सुहाई॥ बृंद बृंद बहु मुनिन्ह लगाई॥ पुर सोभा क २५
छु बरनि न जाई॥ बाहेर नगर परम रुचिराई॥ देखत पुरी अखिल अघ भागा॥ बन उपबन

वापिकातडागा॥ छंद॥ वापीतडागअनूपकूपमनोहरायतसोहहीं॥ सोपानसुंदरनी
रनिर्मलदेखिसुरमुनिमोहहीं॥ वहुरंगकंजअनेकषगकूजहिंमधुपगुंजारहीं॥ आरामर
म्यपिकादिषगरवजनुपथिकहंकारहीं॥ दोहा॥ रमानाथजहँराजासोपुरवरनिकिजा
इ॥ अनिमादिकसुषसंपदारहींअवधसवछाइ॥ २९॥ जहँतहँनररघुपतिगुनगावहिं॥
वैठिपरसपरइहैसिषावहिं॥ भजहुप्रनतप्रतिपालकरामहिं॥ सोभासीलरूपगुनधाम
हिं॥ जलजविलोचनस्यामलगातहिं॥ पलकनयनइवसेवकत्रातहिं॥ धृतसररुचिर
चापतूनीरहि॥ संतकंजवनरविरनधीरहि॥ कालकरालव्यालषगराजहि॥ नमतरामअ
कामममताजहि॥ लोभमोहमृगजूथकिरातहि॥ मनसिजकरिहरिजनसुषदातहि
संसयसोकनिविडतमभानुहि॥ दनुजगहनघनदहनकृसानुहि॥ जनकसुतासमेतरघु

उ० ९६

वीरहि॥ कसनभजहुभंजनभवभीरहि॥ वहुवासनामसकहिमरासिहि॥ सदाएकरसअजा
अविनासिहि॥ मुनिरंजनभंजनमहिभारहि॥ तुलसिदासकेप्रभुहिउदारहि॥ दोहा॥ ए
हिविधिनगरनारिनरकरहिरामगुनगान॥ सानुकूलसवपररहहिंसंततकृपानिधान
३१॥ जवतेरामप्रतापषगेसा॥ उदितभयोअतिप्रवलदिनेसा॥ पूरिप्रकासरहउतिहुंलो
का॥ वहुतेन्हसुषवहुतेन्हमनसोका॥ जिन्हहिसोकतेकहौंवषानी॥ प्रथमअविद्यानिसान
सानी॥ अघउलूकजहंतहालुकाने॥ कामक्रोधकैरवसकुचाने॥ विविधिकर्मगुनकालसु
भाउ॥ एचकोरसुषलहहिंनकाउ॥ मत्सरमानमोहमदचोरा॥ इन्हकरहुनरनकवनि
हुओरा॥ धर्मतडागज्ञानविज्ञाना॥ एपंकजविकसेविधिनाना॥ सुषसंतोषविरागविवे
का॥ विगतसोकयेकोकअनेका॥ दोहा॥ यहप्रतापरविजाकेउरजवकरैप्रकास॥ पछिले

९६

वाढहि प्रथम जे कहे ते पावहि नास ॥ ३४ ॥ भ्रातन्ह सहित राम एक वारा ॥ संग परम प्रिय पव
नकुमारा ॥ सुंदर उपवन देषन गए ॥ सव तरु कुसुमित पल्लव नए ॥ जानि समय सनकादिक
आए ॥ तेजपुंज गुन सील सुहाए ॥ व्रह्मानंद सदा लयलीना ॥ देषत वालक वहुकालीना ॥ रूप
धरे जनु चारिउ वेदा ॥ समदरसी मुनि विगत विभेदा ॥ आसा वसन व्यसन यह तिन्हहीं ॥ रघुपति
चरित होय तहँ सुनहीं ॥ तहाँ रहे सनकादि भवानी ॥ जहँ घटसंभव मुनिवर ज्ञानी ॥ राम क
था मुनिवर वहु वरनी ॥ ज्ञान जोनि पावक जिमि अरनी ॥ दोहा ॥ देषि राम मुनि आवत हरषि
दंडवत कीन्ह ॥ स्वागत पूछि पीत पट प्रभु वैठन कहँ दीन्ह ॥ ३३ ॥ कीन्ह दंडवत तीनिउ भा
ई ॥ सहित पवनसुत सुष अधिकाई ॥ मुनि रघुपति छवि अतुल विलोकी ॥ भए मगन मन
सके न रोकी ॥ स्यामल गात सरोरुह लोचन ॥ सुंदरता मंदिर भवमोचन ॥ एकटक रहे निमे

ॐ ८७

षन लावहिं॥ प्रभु कर जोरि सीस नवावहिं॥ तिन्ह के दसा देषि रघुवीरा॥ श्रवत नयन जल पु
लक सरीरा॥ कर गहि प्रभु मुनिवर बैठारे॥ परम मनोहर वचन उचारे॥ आजु धन्य मैं सुनहु
मुनीसा॥ तुम्हरे दरस जाहिं अघ षीसा॥ बडे भाग पाइउँ सतसंगा॥ विनहि प्रयास होहिं भ
व भंगा॥ दोहा॥ संत संग अपवर्ग कर कामी भव कर पंथ॥ कहहिं संत कवि कोविद श्रुति पुरा
न सद ग्रंथ॥ ३४॥ सुनि प्रभु वचन हरषि मुनि चारी॥ पुलकित तनु अस्तुति अनुसारी॥ ज
य भगवंत अनंत अनामय॥ अनघ अनेक एक करुनामय॥ जय निर्गुन जय जय गुन सा
गर॥ सुषमंदिर सुंदर अति नागर॥ जय इंदिरा रमन जय भूधर॥ अनुपम अज अनादि सो
भाकर॥ ज्ञान निधान अमान मानप्रद॥ पावन सुजस पुरान वेद वद॥ तग्य कृतग्य अग्यता ८७
भंजन॥ नाम अनेक अनाम निरंजन॥ सर्व सर्वगत सर्व उरालय॥ वससि सदा हम कहुं प

रिपालय॥ हरनविपतिभवफंदविभंजय॥ हृदिवसिरामकाममदगंजय॥ दोहा॥ परमानं
दक्रपायतनमनपरिपूरनकाम॥ प्रेमभगतिअनपायनीदेहुहमहिश्रीराम॥ ३५॥ देहु
भगतिरघुपतिअतिपावनि॥ त्रिविधितापभवदापनसावनि॥ प्रनतकामसुरधेनुकल
पतरु॥ होइप्रसन्नदीजैप्रभुयहवरु॥ भववारिधिकुंभजरघुनायक॥ सेवतसुलभसकल
सुषदायक॥ मनसंभवदारुनदुषदारय॥ दीनवंधुसमताविस्तारय॥ आसत्रासइरषा
दिनिवारक॥ विनयविवेकविरतिविस्तारक॥ भूपमौलिमनिमंडनधरनी॥ देहिभगति
संसृतिसरितरनी॥ मुनिमनमानसहंसनिरंतर॥ चरनकमलवंदितअजसंकर॥ रघुकुल
केतुसेतुश्रुतिरछक॥ कालकर्मसुभावगुनभछक॥ तारनतरनहरनसबदूषन॥ तुलसि
दासप्रभुत्रिभुवनभूषन॥ दोहा॥ वारवारअस्तुतिकरिप्रेमसहितसिरनाइ॥ ब्रह्मभवन

ॐ
१८

सनकादि गे अति अभिष्ट सपाऊ ॥ ३६ ॥ सनकादिक विधि लोक सिधाए ॥ भ्रातन्ह राम चर
न्ह सिर नाए ॥ पूछत प्रभुहि सकल सकुचाहीं ॥ चितवहिं सब मारुत सुत पाहीं ॥ सुनी चह
हिं प्रभु मुष कै बानी ॥ जो सुनि होइ सकल भ्रम हानी ॥ अंतरजामी प्रभु सब जाना ॥ बूझत कह
हु काह हनुमाना ॥ जोरि पानि कह तब हनुमंता ॥ सुनहु दीनदयाल भगवंता ॥ नाथ भरत
कछु पूछन चहहीं ॥ प्रस्न करत मन सकुचत अहहीं ॥ तुम्ह जानहु कपि मोर सुभाऊ ॥
भरतहि मोहि कछु अंतर काऊ ॥ सुनि प्रभु बचन भरत गहे चरना ॥ सुनहु नाथ प्रनतार
ति हरना ॥ दोहा ॥ नाथ न मोहि संदेह कछु सपनेहु सोक न मोह ॥ केवल कृपा तुम्हारि
हि कृपानंद संदोह ॥ ३७ ॥ करौं कृपानिधि एक ढिठाई ॥ मैं सेवक तुम्ह जन सुषदाई ॥ सं
तन्ह कै महिमा रघुराई ॥ बहु विधि बेद पुरानन्ह गाई ॥ श्रीमुष तुम्ह पुनि कीन्हि बडाई ॥ १८

तिन्हपरप्रभुहिप्रीतिअधिकाई॥सुनाचहौंप्रभुतिन्हकरलछन॥कृपासिंधुगुनज्ञान
विचछन॥संतअसंतभेदबिलगाई॥प्रनतपालमोहिकहहुबुझाई॥संतन्हकेलछनसु
नुभ्राता॥अगनितश्रुतिपुरानविख्याता॥संतअसंतन्हिकैअसिकरनी॥जिमिकुठारचं
दनआचरनी॥काटैपरसुमलयसुनुभाई॥निजगुनदेइसुगंधबसाई॥दोहा॥ ताते सु
रसीसन्हचढतजगवल्लभश्रीषंड॥अनलदाहिपीटतघनहिपरसुवदनयहदंड॥३८॥
विषयअलंपटसीलगुनाकर॥परदुषदुषसुषसुषदेषेपर॥समअभूतरिपुबिमदविरा
गी॥लोभामर्षहर्षभयत्यागी॥कोमलचितदीननपरदाया॥मनबचक्रमममभगतिअमा व
या॥सबहिमानप्रदआपुअमानी॥भरतप्रानसममममतेप्रानी॥बिगतकाममम नामपरा
यन॥सांतिबिरतिबिनतीमुदितायन॥सीतलतासरलतामयत्री॥द्विजपदप्रीतिधर्मज

उ०
९८

नयत्री॥ येसबलछ्छनबसहिंजासु उर॥ जानेहुतातसंत संततफुर॥ समदमनियमनीतिन
हिंडोलहिं॥ परुषबचनकबहूँनहिंबोलहिं॥ दोहा॥ निंदाअस्तुति उभयसम ममताम
मपदकंज॥ तेसज्जनममप्रानप्रियगुनमंदिरसुषपुंज॥ ३८॥ सुनहुअसंतन्हकेरसुभा
उ॥ भूलेहुसंगतिकरियनकाउ॥ तिन्हकरसंगसदादुषदाई॥ जिमिकपिलहिघालैहर
हाई॥ षलन्हहृदयअतितापबिसेषी॥ जरहिसदापरसंपतिदेषी॥ जहँकहुनिंदासुनहि
पराई॥ हरषहिमनहुपरीनिधिपाई॥ कामक्रोधमदलोभपरायन॥ निर्दयकपटीकुटि
लमलायन॥ बयरअकारनसबकाहूसों॥ जोकरहितअनहितताहूसों॥ झूठइलेनाझूठ
इदेना॥ झूठइभोजनझूठचबेना॥ बोलहिमधुरबचनजिमिमोरा॥ षाहिंमहाअहिहृदय ९८
कठोरा॥ दोहा॥ परद्रोहीपरदाररतपरधनपरअपवाद॥ तेनरपावरपापमयदेहधरे

मनुजाद ॥ ३९ ॥ लोभइ ओढन लोभइ डासन ॥ सिस्नोदर पर जमपुर त्रास न ॥ काहू के देख सो
नहि बडाई ॥ सांस लेहि जनु जूडी आई ॥ जब काहू कै देखहि बिपती ॥ सुखी भए मानहु जग न्रिप
ती ॥ स्वारथ रत परिवार बिरोधी ॥ लंपट काम लोभ अति क्रोधी ॥ मातु पिता गुर बिप्र न मान
हिं ॥ आपु गए अरु घालहि आनहिं ॥ करहि मोह बस द्रोह परावा ॥ संत संग हरि कथा न भा
वा ॥ अवगुन सिंधु मंदमति कामी ॥ बेद बिदूषक परधन स्वामी ॥ बिप्र द्रोह पर द्रोह बिसेषा ॥
दंभ कपट जिय धरे सुबेषा ॥ दोहा ॥ ऐसे अधम मनुज खल कृतजुग त्रेता नाहि ॥ द्वापर कछु
क ब्रंद बहु होइहहिं कलिजुग माहि ॥ ४० ॥ पर हित सरिस धर्म नहि भाई ॥ पर पीडा सम न
हि अधमाई ॥ निर्नय सकल पुरान बेद कर ॥ कहेउ तात जानहि कोबिद नर ॥ नर सरीर ध
रि जे पर पीरा ॥ करहि ते सहहि महा भव भीरा ॥ करहि मोह बस नर अघ नाना ॥ स्वारथ रत

उ० परलोक न साना॥ काल रूप तिन्ह कहँ मैं भ्राता॥ सुभ अरु असुभ कर्म फल दाता॥ अस बिचा
२० रि जे परम सयाने॥ भजहिं मोहि संसृति दुख जाने॥ त्यागहिं कर्म सुभासुभ दायक॥ भजहिं
मोहि सुर नर मुनि नायक॥ संत असंतन्ह के गुन भाये॥ ते न परहिं भव जिन्ह लखि राखे॥ दोहा
सुनहु तात माया कृत गुन अरु दोष अनेक॥ गुन यह उभय न देखिअहिं देखिय सो अबि
वेक॥४१॥ श्रीमुख बचन सुनत सब भाई॥ हरषे प्रेम न हृदय समाई॥ करहिं बिनय अति बार
हिं बारा॥ हनूमान हिय हरष अपारा॥ पुनि रघुपति निज मंदिर गए॥ एहि बिधि चरित कर
त नित नए॥ बार बार नारद मुनि आवहिं॥ चरित पुनीत राम के गावहिं॥ नित नव चरित देखि
मुनि जाहीं॥ ब्रह्मलोक सब कथा कहाहीं॥ सुनि बिरंचि अतिसय सुख मानहिं॥ पुनि पुनि ता १८५
त करहु गुन गानहिं॥ सनकादिक नारदहि सराहहिं॥ जद्यपि ब्रह्म निरत मुनि आहँ धीरे

नतरुबोलेउमा ।।दोहा।। नाथकृतारथभयउँमैंतवदरसनषगराज ।।आयसुदेहुसो
करउँअबप्रभुआयहुजेहिकाज ।।सदाकृतारथरूपतुम्हकहमृदुबचनषगेस ।।जेहि
कैअस्तुतिसादरनिजमुषकीन्हमहेस ।।६४ सुनहुतातजेहिकारनआयउँ ।।सोसबभय
उदरसनतवपायउँ ।।देषिपरमपावनतवआश्रम ।।गयउमोहसंसयनानाभ्रम ।।अबश्री
रामकथाअतिपावनि ।।सदासुषददुषपुंजनसावनि ।।सादरतातसुनावहुमोही ।।बारबा
रबिनवौंप्रभुतोही ।।सुनतगरुडकैगिराबिनीता ।।सरलसुप्रेमसुषदसुपुनीता ।।भयउता
सुमनपरमउछाहा ।।लागकहैरघुपतिगुनगाहा ।।प्रथमहिंअतिअनुरागभवानी ।।राम
चरितसरकहेसिबषानी ।।पुनिनारदकरमोहअपारा ।।कहेसिबहुरिरावनअवतारा ।।प्र
भुअवतारकथापुनिगाई ।।तबसिसुचरितकहेसिमनलाई ।।दोहा।। बालचरितकहिबिबि

उ०
२८

विविधि विधि मन मह परम उछाहू ॥ रिषि आगमन कहेसि पुनि श्री रघुवीर विवाहू ॥ ६५ ॥ वहु
रि राम अभिषेक प्रसंगा ॥ पुनि नृप वचन राज रस भंगा ॥ पुरवासिन्ह कर विरह विषादा ॥ क
हेसि राम लछिमन संवादा ॥ विपिन गवन केवट अनुरागा ॥ सुरसरि उतरि निवास प्रयागा ॥
वालमीकि प्रभु मिलन वषाना ॥ चित्रकूट जिमि वसे भगवाना ॥ सचिवागमन नगर नृप म
रना ॥ भरतागमन प्रेम वहु वरना ॥ करि नृप क्रिया संग पुरवासी ॥ भरत गए जहँ प्रभु सुषरा
सी ॥ पुनि रघुपति वहु विधि समुझाए ॥ लै पादुका अवधपुर आए ॥ भरत रहनि सुरपति सुत
करनी ॥ प्रभु अरु अत्रि भेट पुनि वरनी ॥ दोहा ॥: कहि विराध वध जेहि विधि देह तजी सरभं
ग ॥ वरनि सुतीछन प्रीति पुनि प्रभु अगस्ति सतसंग ॥ ६६ ॥ कहि दंडक वन पावनताई ॥ गीध   २८
मयत्री पुनि तेहि गाई ॥ पुनि प्रभु पंचवटी कृत वासा ॥ भंजी सकल मुनिन्ह की त्रासा ॥ पुनि

लछिमन उपदेस अनूपा॥ सूपनखा जिमि कीन्ह कुरूपा॥ खर दूषन बध बहुरि बखाना॥ जिमि सब मरम दसानन जाना॥ दसकंधर मारीच बतकही॥ जेहि बिधि भई सो सब तेहि कही॥ पुनि माया सीता कर हरना॥ श्रीरघुबीर बिरह कछु बरना॥ पुनि प्रभु गीध क्रिया जिमि कीन्ही॥ बधि कबंध सबरिहि गति दीन्ही॥ बहुरि बिरह बरनत रघुबीरा॥ जेहि बिधि गए सरोवर तीरा॥

दोहा॥ प्रभु नारद संबाद कहि मारुति मिलन प्रसंग॥ पुनि सुग्रीव मिताई बालि प्रान कर भंग॥ कपिहि तिलक करि प्रभु कृत सैल प्रबरषन बास॥ बरनन बरषा सरद अरु राम रोष कपि त्रास॥६१॥ जेहि बिधि कपिपति कीस पठाए॥ सीता खोज सकल दिसि धाए॥ बिबर प्रबेस कीन्ह जेहि भांती॥ कपिन्ह बहोरि मिला संपाती॥ सुनि सब कथा समीरकुमारा॥ नांघत भयो पयोधि अपारा॥ लंका कपि प्रबेस जिमि कीन्हा॥ पुनि सीतहि धीरज जिमि दीन्हा॥ बन उ

ॐ जारिरावनहिप्रवोधी॥ पुरदहिनाघेअकुरिपयोधी॥ आएकपिसवजहंरघुराई॥ वैदेहीकी
३० कुसलसुनाई॥ सेनसमेतजथारघुवीरा॥ उतरेजाइवारिनिधितीरा॥ मिलाविभीषनजेहि
विधिआई॥ सागरनिग्रहकथासुनाई॥ दोहा॥ सेतुवांधिकपिसेनजिमि उतरीसागरपा
र॥ गएअकसीठिवीरवरजेहिविधिवालिकुमार॥ निसिचरकीसलराईवरनेसिविविधिप्र
कार॥ कुंभकरनघननादकरवलपौरुषसंघार॥ ६६॥ निसिचरनिकरमरनविधिनाना
रघुपतिरावनसमरवषाना॥ रावनवधमंदोदरिसोका॥ राजविभीषनदेवअसोका॥ सीता
रघुपतिमिलनवहोरी॥ सुरन्हकीन्हअस्तुतिकरजोरी॥ पुनिपुष्पकचढिकपिन्हसमेता
अवधचलेप्रभुकृपानिकेता॥ जेहिविधिरामनगरनिजआए॥ वा[illegible]यसविसदचरित्तसव स ३०
गाए॥ कहेसिवहोरिरामअभिषेका॥ पुरवरननन्टपनीतिअनेका॥ कथासमस्तभुसुंड

वयानी॥ जौमैतुम्हसनकही भवानी॥ मुनिसवरामकथाषगनाहा॥ कहतवचनमनपरमउ
छाहा॥ सोरठा॥ः गए उ मोरसंदेह सुनेउँ सकलरघुपतिचरित॥ भए उ रामपदनेहतवप्रसा
दवायसतिलक॥ मोहिभए उ अतिमोहप्रभुवंधनरनमहनिरषि॥ चिदानंदसंदोहरामवि
कलकारनकवन॥ ६८॥ देषिचरितअतिनरअनुसारी॥ भए उ हृदयममसंसयभारी॥ सो
इभ्रमअवहितकरि मैमाना॥ कीन्हअनुग्रहकृपानिधाना॥ जोअतिआतपव्याकुलहोई
तरुछायासुषजानैसोई॥ जौनहिहोतमोहअतिमोही॥ मिलतेउँतातकवनविधितो
ही॥ सुनतेउँकिमिहरिकथासुहाई॥ अतिविचित्रवहुविधितुम्हगाई॥ निगमागमपुरान
मतयेहा॥ कहहिंसिद्धमुनिनहिसंदेहा॥ संतविसुद्धमिलहिपरितेही॥ चितवहिरामकृ
पाकरजेही॥ रामकृपातवदरसनभए उ॥ तवप्रसादसवसंसयगए उ॥ दोहा॥ःसुनिवि

१३० खगपतिवानीसहितविनयअनुरागा॥पुलकगातलोचनसजलमनहरषेउअतिकाग
३१ श्रोतासुमतिसुसीलसुचिकथारसिकहरिदास॥पाइउमाअतिगोप्यमपिसज्जनकरहि
प्रकास॥७०॥बोलेउकागभुसुंडबहोरी॥नभगनाथपरप्रीतिनथोरी॥सबविधिनाथ
पूज्यतुम्हमेरे॥कृपापात्ररघुनायककेरे॥तुम्हहिनसंसयमोहनमाया॥मोपरनाथकी
न्हितुम्हदाया॥पठैमोहमिसखगपतितोही॥रघुपतिदीन्हिबडाईमोही॥तुम्हनिजमोह
कहीखगसांई॥सोनहिंकछुआचरजगोसांई॥नारदभवविरंचिसनकादी॥जेमुनिनाय
कआतमवादी॥मोहनअंधकीन्हकेहिकेही॥कोजगकामनचावनजेही॥त्रिस्नाकेहिन
कीन्हबौराहा॥केहिकरहृदयक्रोधनहिदाहा॥दोहा॥ग्यानीतापससूरकविकोविदगु ३१
नआगार॥केहिकैलोभविडंबनाकीन्हनएहिसंसार॥श्रीमदवक्रनकीन्हकेहिप्रभु

नाचविसनकाहि॥ मृगलोचनिलोचनसरकोअसलागनजाहि॥ ७०॥ गुनकृतसन्यिपात
नहिंकेही॥ कोउनमानमदतजेउनिबेही॥ जोबनज्वरकेहिनहिंबलकावा॥ ममताकेहि
करजसनसावा॥ मत्सरकाहिकलंकनलावा॥ काहिनसोकसमीरडोलावा॥ चिंतासा
पिनिकोनहिंखाया॥ कोजगजाहिनब्यापीमाया॥ कीटमनोरथदारुसरीरा॥ जेहिनला
गघुनकोअसधीरा॥ सुतबितनारिईषनातीनी॥ केहिकैमतिइन्हकृतनमलीनी॥ यह
सबमायाकरपरिवारा॥ प्रबलअमितकोबरनैपारा॥ सिवचतुराननजाहिडेराहीं॥ अपर
जीवकेहिलेखेमाहीं॥ दोहा॥ः ब्यापिरहेउसंसारमहमायाकटकप्रचंड॥ सेनापतिका
मादिभटदंभकपटपाषंड॥ सोदासीरघुबीरकैसमुझेमिथ्यासोपि॥ छूटनरामकृपाबि
नुनाथकहौंपदरोपि॥ ७१॥ जोमायासबजगहिनचावा॥ जासुचरितलखिकाहुनपावा॥

७० सोइ प्रभु भ्रू बिलास खगराजा॥ नाच नटी इव सहित समाजा॥ सोइ सच्चिदानंद घन रामा॥
३२ अज विज्ञान रूप बल धामा॥ व्यापक व्यापि अखंड अनंता॥ अखिल अमोघ सक्ति भगवंता॥
अगुन अदभ्र गिरा गोतीता॥ सबदरसी अनवद्य अजीता॥ निर्मम निराकार निर्मोहा॥ नि
त्य निरंजन सुख संदोहा॥ प्रकृति पार प्रभु सब उर बासी॥ ब्रह्म निरीह बिरज अविनासी॥ इ
हाँ मोह कर कारन नाहीं॥ रवि सन्मुख तम कबहुँ कि जाहीं॥ दोहा॥ भगत हेतु भगवान प्र
भु राम धरेउ तनु भूप॥ किए चरित पावन परम प्राकृत नर अनुरूप॥ जथा अनेक वेष धरि नृ
त्य करै नट कोइ॥ सोइ सोइ भाव देखावै आपुन होइ न सोइ॥ ७२॥ असि रघुपति लीला उ
रगारी॥ दनुज विमोहनि जन सुखकारी॥ जे मति मलिन विषय बस कामी॥ प्रभु पर मोह धरहिं
इमि स्वामी॥ नयन दोष जा कहँ जब होई॥ पीत बरन ससि कहँ कहु सोई॥ जब जेहि दिसि भ्रं ३२

महोइखगेसा॥ सोकहपश्चिम उ॰ उदिनेसा॥ नौकारूढ़ चलतजगदेखा॥ अचलमोहवसआ
पुहिलेखा॥ बालकभ्रमहिंनभ्रमहिंगृहादी॥ कहहिंपरस्परमिथ्यावादी॥ हरिविषइकअ
समोहविहंगा॥ सपनेहुनहिंअज्ञानप्रसंगा॥ मायावसमतिमंदअभागी॥ हृदयजवनि
काबहुविधिलागी॥ तेसठहठवससंसयकरहीं॥ निजअज्ञानरामपरधरहीं॥ दोहा॥ काम
क्रोधमदलोभरतगृहासक्तेदुखरूप॥ तेकिमिजानहिंरघुपतिहिमूढ़परेतमकूप॥ निर्गु
नरूपसुलभअतिसगुनजाननहिंकोइ॥ सुगमअगमनानाचरितसुनिमुनिमनभ्रम
होइ॥ ७४॥ सुनुखगेसरघुपतिप्रभुताई॥ कहौंजथामतिकथासुहाई॥ जेहिविधिमोह
भए उप्रभुमोही॥ सो उसवकथासुनावौंतोही॥ रामकृपाभाजनतुम्हताता॥ हरिगु
नप्रीतिमोहिसुखदाता॥ तातेनहिंकछुतुम्हहिंदुरावौं॥ परमरहस्यमनोहरगावौं॥ सु

३० नउरा मकर सहज सुभाऊ॥ जन अभिमान न राषहिं काऊ॥ संसृत मूल सूलप्रद नाना
३३ सकल सोकदायक अभिमाना॥ तातें करहिं कृपानिधि दूरी॥ सेवक पर ममता अति भूरी॥ जि
मि सिसु तन ब्रन होइ गोसांई॥ मातु चिराव कठिन की नांई॥ दोहा॥ जदपि प्रथम दुष पावै
रोवै बाल अधीर॥ ब्याधि नास हित जननी गनति न सो सिसु पीर॥ तिमि रघुपति निज दास क
र हरहिं मान हित लागि॥ तुलसिदास ऐसे प्रभुहि कस न भजहु भ्रम त्यागि॥ ७५॥ राम कृपा
आपनि जडताई॥ कहौं षगेस सुनहु मन लाई॥ जब जब राम मनुज तनु धरहीं॥ भक्त हेतु ली
ला बहु करहीं॥ तब तब अवधपुरी मैं जाऊं॥ बाल चरित बिलोकि हरषाऊं॥ जन्म महोत्स
व देषौं जाई॥ बरष पांच तहं रहउं लोभाई॥ इष्टदेव मम बालक रामा॥ सोभा बपुष कोटि ३३
सत कामा॥ निज प्रभु बदन निहारि निहारी॥ लोचन सुफल करउं उरगारी॥ लघु बायस

बपुधरि हरिसंगा॥ देखेउँ बालचरित बहु रंगा॥ दोहा॥ लरिकाईं जहँ जहँ फिरहिं तहँ
तहँ संग उड़ाउँ॥ जूठनि परै अजिर महँ सो उठाइ करि षाउँ॥ एक बार अतिसय सब च
रित किए रघुबीर॥ सुमिरत प्रभु लीला सोइ पुलकित भयउ सरीर॥ ७५॥ कहै भुसुंड सुन
हु षगनायक॥ रामचरित सेवक सुषदायक॥ न्रिपमंदिर सुंदर सब भाँती॥ षचित कनक
मनि नाना जाती॥ बरनि न जाइ रुचिर अंगनाई॥ जहँ षेलहिं नित चारिउ भाई॥ बाल
बिनोद करत रघुराई॥ बिचरत अजिर जननि सुषदाई॥ मरकत म्रदुल कलेवर स्यामा॥
अंग अंग प्रति छबि बहु कामा॥ नव राजीव अरुन म्रदु चरना॥ पदज रुचिर नष ससि दु
ति हरना॥ ललित अंक कुलिसादिक चारी॥ नूपुर चारु मधुर रवकारी॥ चारु पुरट मनि
रचित बनाई॥ कटि किंकिनि कल मुषर सोहाई॥ दोहा॥ रेषा त्रय सुंदर उदर नाभी

७० रुचिरगंभीर ॥ उरआयतभ्राजतविविधिवालविभूषनचीर ॥ ७७ ॥ अरुनपानिनखक
३४ रजमनोहर ॥ बाहुबिसालबिभूषनसुंदर ॥ कंधबालकेहरिदरग्रीवां ॥ चारुचिबुकआ
ननछबिसीवां ॥ कलबलवचनअधरअरुनारे ॥ दुइदुइदसनविसदवरवारे ॥ ललि
तकपोलमनोहरनासा ॥ सकलसुखदससिकरसमहासा ॥ नीलकंजलोचनभवमोच
न ॥ भ्राजतभालतिलकगोरोचन ॥ विकटभ्रकुटिसमश्रवनसोहाए ॥ कुंचितकचमेच
कछविछाए ॥ पीतझीनझगुलीतनसोही ॥ किलकनिचितवनिभावतिमोही ॥ रूपराशि
नृपअजिरविहारी ॥ नाचहिंनिजप्रतिविंवनिहारी ॥ मोहिसनकरहिंविविधिविधिक्री
डा ॥ वरनतमोहिहोतअतिव्रीडा ॥ किलकतमोहिधरनजबधावहिं ॥ चलौंभागितब ३४
पूपदेखावहिं ॥ दोहा ॥ आवतनिकटहसहिंप्रभुभाजतरुदनकराहिं ॥ जाउंसमीपग

हनपदपिपिलिकि चिनैपराहिं॥ प्राकृतसिसुइवलीलादेखिभयउमोहिमोह॥ कवनच
रित्रकरतप्रभुचिदानंदसंदोह॥ ७८॥ येतनामनआनतखगराया॥ रघुपतिप्रेरितव्यापी
माया॥ सोमायानदुखदमोहिकाही॥ आनजीवइवसंसृतिनाही॥ नाथइहांकछुकार
नआना॥ सुनहुसोसावधानहरिजाना॥ ज्ञानअखंडएकसीतावर॥ मायावस्यजीवस
चराचर॥ जौंसबकेरहज्ञानएकरस॥ ईश्वरजीवहिभेदकहहुकस॥ मायावस्यजीवअ
भिमानी॥ ईसवस्यमायागुनखानी॥ परवसजीवस्ववसभगवंता॥ जीवअनेकएकश्री
कंता॥ मुधाभेदजद्यपिकृतमाया॥ बिनुहरिजाइनकोटिउपाया॥ दोहा॥ रामचंद्रके
भजनबिनुजोचहपदनिर्वान॥ ज्ञानवंतअपिसोनरपसुबिनुपूंछबिषान॥ राकापति
षोडसउअहितारागनसमुदाइ॥ सकलगिरिन्हदवलाइयबिनुरबिरातिनजाइ॥

७८॥ ऐसेहि हरि बिनु भजन षगेसा॥ मिटै न जीवन्ह केर कलेसा॥ हरि सेवकहि न ब्या ३०
प अबिद्या॥ प्रभु प्रेरित ब्यापै तेहि बिद्या॥ ताते नास न होइ दास कर॥ भेद भगति बाढै बिहं
३५ गवर॥ भ्रम ते चकित राम मोहि देखा॥ बिहसे सो सुनु चरित बिसेषा॥ तेहि कौतुक कर म
रमु न काहू॥ जाना अनुज न मातु पिताहू॥ जानु पानि धाए मोहि धरना॥ स्यामल गात
अरुन कर चरना॥ तब मै भागि चलेउँ उरगारी॥ राम गहन कहँ भुजा पसारी॥ जिमि जि
मि दूरि उडाउँ अकासा॥ तहँ भुज हरि देखौं निज पासा॥ दोहा॥ ब्रह्मलोक लगि गयउँ
मै चितयउँ पाछ उडात॥ जुग अंगुल कर बीच सब राम भुजहि मोहि तात॥ सप्तावरन ३५
भेद करि जहाँ लगे गति मोरि॥ गयउँ तहाँ प्रभु भुज निरखि ब्याकुल भयउँ बहोरि॥ ७९
मूदेउँ नयन त्रसित जब भयउँ॥ पुनि चितवत कोसलपुर गयउँ॥ मोहि बिलोकि राम मुसुकाहीं

बिहँसत तुरत गएउँ मुख माहीं॥ उदर माँझ सुनु अंडज राया॥ देखेउँ बहु ब्रह्मांड निकाया॥
अति बिचित्र तहँ लोक अनेका॥ रचना अधिक एक ते एका॥ कोटिन्ह चतुरानन गौरीसा॥ अ
गनित उडगन रबि रजनीसा॥ अगनित लोकपाल जम काला॥ अगनित भूधर भूमि बिसा
ला॥ सागर सरि सर बिपिन अपारा॥ नाना भाँति सृष्टि बिस्तारा॥ सुर मुनि सिद्ध नाग नर किन्न
र॥ चारि प्रकार जीव सचराचर॥ दोहा॥ जो नहिं देखा नहिं सुना जो मनहूँ न समाइ॥ सो सब
अद्भुत देखेउँ बरनि कवनि बिधि जाइ॥ एक एक ब्रह्मंड महुँ रहौं बरष सत एक॥ एहि बिधि
देखत फिरौं मैं अंड कटाह अनेक॥ ८१॥ लोक लोक प्रति भिन्न बिधाता॥ भिन्न बिष्णु सिव
मनु दिसित्राता॥ नर गंधर्ब भूत बेताला॥ किन्नर निसिचर पसु खग ब्याला॥ देव दनुज गन
नाना जाती॥ सकल जीव तहँ आनहि भाँती॥ महि सरि सागर सर गिरि नाना॥ सब प्रपंच त

उ०
५३

हँ आनइ आना॥ अंडकोस प्रति प्रति निज रूपा॥ देषेउँ जिनस अनेक अनूपा॥ अवधपु
री प्रति भुवन निनारी॥ सरजू भिन्न भिन्न नर नारी॥ दसरथ कौसल्या सुनु ताता॥ विविध
रूप भरतादिक भ्राता॥ प्रति ब्रह्मांड राम अवतारा॥ देषेउँ बालविनोद अपारा॥ दोहा॥
भिन्न भिन्न मैं दीष सब अति विचित्र हरिजान॥ अगनित भुवन फिरेउँ प्रभु राम न देषे
उँ आन॥ सोइ सिसुपन सोइ सोभा सोइ कृपाल रघुवीर॥ भुवन भुवन देषत फिरौं प्रेरित मो
ह समीर॥ ८१॥ भ्रमत मोहि ब्रह्मांड अनेका॥ बीते मनहुँ कल्प सत एका॥ फिरत फिरत निज १
आश्रम आएउँ॥ तहँ पुनि रहि कछु काल गवाँएउँ॥ निज प्रभु जन्म अवध सुनि पाएउँ
निर्भर प्रेम हरषि उठि धाएउँ॥ देषेउँ जन्म महोत्सव जाई॥ जेहि विधि प्रथम कहा मैं गा राम
ई॥ राम उदर देषेउँ जग नाना॥ देषत बनै न जाइ बषाना॥ तहँ पुनि देषेउँ राम सुजाना॥

मायापतिक्रुपालभगवाना॥ कहौंबिचारबहोरिबहोरी॥ मोहकलिलब्यापितमतिमोरी
उभैघरीमहँमैसबदेषा॥ भएउँभ्रमितमनमोहबिसेषा॥ **दोहा**॥ देषिक्रुपालबिकलमो
हिबिहसेतबरघुबीर॥ बिहँसतहीमुषबाहेरआएउँसुनुमतिधीर॥ सोइलरिकाईमोसन
करनलगेपुनिराम॥ कोटिभाँतिसमुझाउँमननलहैबिश्राम॥ ८२॥ देषिचरितयहसोप्र
भुताई॥ समुझतदेहदसाबिसराई॥ धरनिपरेउँमुषआवनबाता॥ त्राहित्राहिआरतजेन
त्राता॥ प्रेमाकुलप्रभुमोहिबिलोकी॥ निजमायाप्रभुतातबरोकी॥ करसरोजप्रभुममसि
रधरेऊ॥ दीनदयालसकलदुषहरेऊ॥ कीन्हराममोहिबिगतबिँहा॥ सेवकसुषदक्रुपा मो
संदोहा॥ प्रभुताप्रथमबिचारिबिचारी॥ मनमहँहोइहरषअतिभारी॥ भगतबछलता
प्रभुकैदेषी॥ उपजीममउरप्रीतिबिसेषी॥ सजलनयनपुलकितकरजोरी॥ कीन्हि

उ उँवहु बिधि बिनय बहोरी॥ दोहा॥ सुनि सप्रेम मम बानी देषि दीन निज दास॥ बचन सुष
३६ गंभीर म्रदु बोले रमानिवास॥ कागभसुंड मागु बर अति प्रसन्न मोहि जानि॥ अनिमा
दिक सिधि अपर रिधि मोछ सकल सुष षानि॥ ८४॥ ग्यान बिबेक बिरति बिग्याना॥ मुनि दु
र्लभ गुन जे जग जाना॥ आजु देउँ सब संसय नाहीं॥ मागु जो तोहि भाव मन माहीं॥ सुनि प्र
भु बचन अधिक अनुरागेउँ॥ मन अनुमान करन तब लागेउँ॥ प्रभु कह देन सकल सुष स
ही॥ भगति आपनी देन न कही॥ भगति हीन गुन सब सुष ऐसे॥ लवन बिना बहु बिंजन जै
से॥ भजन हीन सुष कवने काजा॥ अस बिचारि बोलेउँ षगराजा॥ जौं प्रभु होइ प्रसन्न बर
देहू॥ मो पर करहु क्रिपा अरु नेहू॥ मन भावत बर मागौं स्वामी॥ तुम्ह उदार उर अंतरजामी ३६
दोहा॥ अबिरल भक्ति बिसुद्ध तव श्रुति पुरान जो गाव॥ जेहि षोजत जोगीस मुनि प्रभु प्र

माद को उपाव॥ भक्त कल्पतरु प्रनत हित कृपा सिंधु सुख धाम॥ सोइ निज भक्ति मोहि प्र
भु देहु दया करि राम॥ ८५॥ एवमस्तु कहि रघुकुलनायक॥ बोले बचन परम सुखदायक॥
सुनु बायस तैं सहज सयाना॥ काहे न मागसि अस बरदाना॥ सब सुख खानि भगति तैं मागी
नहिं जग कोउ तोहि सम बड़भागी॥ जो मुनि कोटि जतन नहिं लहहीं॥ जे जप जोग अनल
तन दहहीं॥ रीझेउँ देखि तोरि चतुराई॥ मागेहु भगति मोहि अति भाई॥ सुनु बिहंग प्रसा
द अब मोरें॥ सब सुभ गुन बसिहहिं उर तोरें॥ भगति ग्यान बिग्यान बिरागा॥ जोग चरित्र
रहस्य बिभागा॥ जानब तैं सबही कर भेदा॥ मम प्रसाद नहिं साधन खेदा॥ दोहा॥ माया
संभव भ्रम सब अब न ब्यापिहहिं तोहि॥ जानेसु ब्रह्म अनादि अज अगुन गुनाकर मो
वि हि॥ मोहि भगत प्रिय संतत अस बिचारि सुनु काग॥ कायँ बचन मन मम पद करेसु अच

उ॰ लअनुरागा ॥ ८६ ॥ अब सुनु परम बिमल मम बानी ॥ सत्य सुगम निगमादि बखानी ॥ नि
३८ ज सिद्धांत सुनावौं तोही ॥ सुनि मन धरु सब तजि भजु मोही ॥ मम माया संभव संसारा ॥ जी
व चराचर बिबिध प्रकारा ॥ सब मम प्रिय सब मम उपजाए ॥ सब ते अधिक मनुज मो
हि भाए ॥ तिन्ह महँ द्विज द्विज महँ श्रुतिधारी ॥ तिन्ह महँ निगम धर्म अनुसारी ॥ ति
न्ह महँ प्रिय बिरक्त पुनि ग्यानी ॥ ग्यानिहु ते अति प्रिय बिग्यानी ॥ तिन्ह ते पुनि मोहि प्रि
य निज दासा ॥ जेहि गति मोरि न दूसरि आसा ॥ पुनि पुनि सत्य कहौं तोहि पाहीं ॥ मोहि से
वक सम प्रिय कोउ नाहीं ॥ भक्ति हीन बिरंचि किन होई ॥ सब जीवन सम प्रिय मोहि सो
ई ॥ भगतिवंत अति नीचौ प्रानी ॥ मोहि प्रानप्रिय असि मम बानी ॥ दोहा ॥ सुचि सुसील
सेवक सुमति प्रिय कहु काहि न लाग ॥ श्रुति पुरान कहनी ति असि सावधान सुनु काग ३८

८७॥ एक पिता के बिपुल कुमारा॥ होहिं पृथक गुन सील अचारा॥ को उ पंडित को उ ता
पस ग्याता॥ को उ धनवंत सूर को उ दाता॥ को उ सर्बग्य धर्मरत कोई॥ सब पर पितहि प्रीति
सम होई॥ को उ पितु भगत बचन मन कर्मा॥ सपनेहु जान न दूसर धर्मा॥ सो सुत प्रिय पि
तु प्रान समाना॥ जद्यपि सो सब भाँति अयाना॥ एहि बिधि जीव चराचर जेते॥ त्रिजग देव न
र असुर समेते॥ अखिल बिस्व यह मोर उपाया॥ सब पर मोहि बराबरि दाया॥ तिन्ह महँ
जो परिहरि मद माया॥ भजइ मोहि मन बच अरु काया॥ दोहा॥ पुरुष नपुंसक नारि
वा जीव चराचर कोइ॥ सर्ब भाव भजि कपट तजि मोहि परम प्रिय सोइ॥ सोरठा॥ सत्य क
हौं खग तोहि सुचि सेवक मम प्रान प्रिय॥ अस बिचारि भजु मोहि परिहरि आस भरोस स
ब॥ ८८॥ कबहूं काल न ब्यापिहि तोही॥ सुमिरेहु भजेहु निरंतर मोही। प्रभु बचनामृत

३० मुनिनन्नअघाउँ॥ तनपुलकितमनअतिहरषाउँ॥ सोसुषजानैमनअरुकाना॥ नहि
३९ रसनापहिंजाइवषाना॥ प्रभुसोभासुषजानहिंनयना॥ कहिकिमिसकहितिन्हहि
नहिंवैना॥ वहुविधिमोहिप्रवोधिसुषदेई॥ लगेकरनसिसुकौतुकतेई॥ सजलनय
नकछुमुषकरिरूषा॥ चितैमातुलागीअतिभूषा॥ देषिमातुआतुरउठिधाई॥ कहि
मृदुवचनलिएउरलाई॥ गोदराषिकरावपयपाना॥ रघुवरिचरितललितकरगा
ना॥ सोरठा॥ः जेहिसुषलागिपुरारिअसुभवेषकृतसिवसुषद॥ अवधपुरीनरनारि
तेहिसुषमहुँसंततमगन॥ सोईसुषलवलेसजिन्हवारकसपनेहुँलहेउ॥ तेनहिगन
हिंषगेसव्रह्मसुषहिसज्जनसुमति॥ ८८॥ मैपुनिअवधरहेउँकछुकाला॥ देषेउँवाल ३९
विनोदरसाला॥ रामप्रसादभगतिवरपाएउँ॥ प्रभुपदवंदिनिजाश्रमआएउँ॥ तवते

मोहितब्यापीमाया॥जबतेरघुनायकअपनाया॥यहसबगुप्तचरितमैगावा॥हरिमा
याजिमिमोहिनचावा॥निजअनुभवअबकहौंखगेसा॥बिनुहरिभजनजाँहिकलेसा॥ २
रामकृपाबिनुसुनुखगराई॥जानिनजाइरामप्रभुताई॥जानेबिनुनहोइपरतीती॥बि
नुपरतीतिहोइनहिप्रीती॥प्रीतिबिनानहिभक्तिदृढाई॥जिमिखगपतिजलकैचि
कनाई॥सोरठा॥ःबिनुगुरुहोइकिज्ञानज्ञानकिहोइबिरागबिनु॥गावहिबेदपुरान
सुषकिलहियहरिभगतिबिनु॥कोउबिश्रामकिपावतातसहजसंतोषबिनु॥चलैकि
जलबिनुनावकोटिजतनपचिपचिमरिय॥८९॥बिनुसंतोषनकामनसाहीं॥काम
अछतसुषसपनेहुनाहीं॥रामभजनबिनुमिटहिकिकामा॥थलबिहीनतरुकब
हुकिजामा॥बिनुबिज्ञानकिसमताआवै॥कोउअवकासकिनभबिनुपावै॥श्रद्धाबि

उ०
७०

नाथ धर्म नहि होई॥ बिनु महि गंध कि पावै कोई॥ बिनु तप तेज कि कर बिस्तारा॥ जल बि
नु रस कि होइ संसारा॥ सील कि मिलु बिनु बुध सेवकाई॥ जिमि बिनु तेज न रूप गोसाँई॥
निज सुख बिनु मन होइ कि थीरा॥ परस कि होइ बिहीन समीरा॥ कवनिउ सिद्धि कि बि
नु बिस्वासा॥ बिनु हरि भजन न भव भय नासा॥ दोहा॥ बिनु बिस्वास भक्ति नहि तेहि बिनु
द्रवहिं न राम॥ राम कृपा बिनु सपनेहु जीव न लह बिश्राम॥ सोरठा॥ अस बिचारि म
तिधीर तजि कुतर्क संसय सकल॥ भजहु राम रघुबीर करुनाकर सुंदर सुखद॥ ९०॥
निज मति सरिस नाथ मै गाई॥ प्रभु प्रताप महिमा खगराई॥ कहेउँ न कछु करि जुगुति
बिसेषी॥ यह सब मै निज नयनन्हि देखी॥ महिमा नाम रूप गुन गाथा॥ सकल अमित
अनंत रघुनाथा॥ निज निज मति मुनि हरि गुन गावहिं॥ निगम सेष सिव पार न पावहिं

७०

तुम्हहिआदिषगमसकप्रजंता॥नभउडाहिंनहिपावहिंअंता॥तिमिरघुपतिमहिमा
अवगाहा॥तातकबहुकोउपावकिथाहा॥रामकामसतकोटिसुभगतन॥दुर्गाकोटि
अमितअरिमर्दन॥सक्रकोटिसतसरिसबिलासा॥नभसतकोटिअमितअवकासा॥दो
हा॥ मरुतकोटिसतबिपुलबलरबिसतकोटिप्रकास॥ससिसतकोटिसुसीतलसमनस न
कलभवत्रास॥कालकोटिसतसरिसअतिदुस्तरदुर्गदुरंत॥धूमकेतुसतकोटिसमदुरा
धरषभगवंत॥ ९१॥प्रभुअगाधसतकोटिपताला॥समनकोटिसतसरिसकराला॥
तीरथअमितकोटिसमपावन॥नामअखिलअघपुंजनसावन॥हिमगिरिकोटिअ
चलरघुबीरा॥सिंधुकोटिसतसमगंभीरा॥कामधेनुसतकोटिसमाना॥सकलकाम
दायकभगवाना॥सारदकोटिअमितचतुराई॥बिधिसतकोटिसृष्टिनिपुनाई॥बि

उ०
५१

ष्मुकोटिसमपालनकर्त्ता॥रुद्रकोटिसतसमसंहर्त्ता॥धनदकोटिसतसमधनवाना॥
मायाकोटिप्रपंचनिधाना॥धराधरनसतकोटिअहीसा॥निरवधिनिरुपमप्रभुजग
दीसा॥छंद॥ निरुपमनउपमाआनरामसमानरामनिगमकहे॥जिमिकोटिसतख
द्योतसमरविकहतअतिलघुतालहे॥एहिभाँतिनिजनिजमतिविलासमुनीसहरि
हिवखानही॥प्रभुभावगाहकअतिकृपालसप्रेमसुनिसुषमानही॥दोहा॥रामअ
मितगुनसागरथाहकिपावैकोइ॥संतन्हसनजसकिछुसुनेउतुम्हहिसुनाएउ
सोइ॥सोरठा॥भाववस्यभगवानसुषनिधानकरुनाभवन॥तजिममतामदमानभ
जियसदासीतारवन॥चौ०॥सुनिभसुंडिकेवचनसुहाए॥हरषितषगपतिपंषफु ४१
लाए॥नयननीरमनअतिहरषाना॥श्रीरघुपतिप्रभावउरआना॥पाछिलमोह

समुझि पछि जाना॥ ब्रह्म अनादि मनुज करि माना॥ पुनि पुनि काग चरन सिर नावा॥ जा
नि राम सम प्रेम बढावा॥ गुर बिनु भव निधि तरै न कोई॥ जौं बिरंचि संकर सम होई॥ संस
य सर्प ग्रसेउ मोहि ताता॥ दुखद लहरि कुतर्क बहु ब्राता॥ तव सरूप गारुडि रघुनायक
मोहि जिआएउ जन सुखदायक॥ तव प्रसाद मम मोह नसाना॥ राम रहस्य अनूपम
जाना॥ दोहा॥ ताहि प्रसंसि बिबिधि बिधि सीस नाइ कर जोरि॥ बचन बिनीत सप्रेम मृ
दु बोलेउ गरुड बहोरि॥ प्रभु अपने अबिबेक ते बूझौं स्वामी तोहि॥ कृपासिंधु सादर क
हहु जानि दास निज मोहि॥ ९४॥ तुम्ह सर्बग्य तग्य तम पारा॥ सुमति सुसील सरल आ
चारा॥ ग्यान बिरति बिग्यान निवासा॥ रघुनायक के तुम्ह प्रिय दासा॥ कारन कवन देह म
यह पाई॥ तात सकल मोहि कहहु बुझाई॥ राम चरित सर सुंदर स्वामी॥ पायहु कहा

उ० कहहु न भगामी॥ नाथ सुना मैं अस सिव पाहीं॥ महा प्रलयहु नास तव नाहीं॥ मुधा बच
५५ न नहिं ईस्वर कहई॥ सो उ मोरें मन संसय अहई॥ अग जग जीव नाग नर देवा॥ नाथ स
कल जग काल कलेवा॥ अंड कटाह अमित लय कारी॥ काल सदा दुरतिक्रम भारी॥ सोर
ठा॥ तुम्हहि न ब्यापत काल अति कराल कारन कवन॥ मोहि सो कहहु कृपाल ग्यान प्र
भाव कि जोग बल॥ दोहा॥ प्रभु तव आश्रम आएँ उ मोर मोह भ्रम भाग॥ कारन कवन
सो नाथ सब कहहु सहित अनुराग॥ ९५॥ गरुड गिरा सुनि हरषेउ कागा॥ बोलेउ उमा
परम अनुरागा॥ धन्य धन्य तव मति उरगारी॥ प्रस्न तुम्हारि मोहि अति प्यारी॥ सुनि तव
प्रस्न सप्रेम सुहाई॥ बहुत जनम कै सुधि मोहि आई॥ सब निज कथा कहौं मैं गाई॥ तात ५५
सुनहु सादर मन लाई॥ जप तप मख सम दम ब्रत दाना॥ बिरति बिबेक जोग बिग्याना॥ स

क्करफलरघुपतिपदप्रेमा॥तेहिबिनुकोउनपावैछेमा॥एहितनरामभगतिमैपाई॥ता
तेमोहिममताअधिकाई॥जेहितेंकछुनिजस्वारथहोई॥तेहिपरममताकरसबकोई॥सो
रठा॥ पन्नगारिअसिनीतिश्रुतिसंमतसज्जनकहहिं॥अतिनीचहुसनप्रीतिकरियजानि
निजपरमहित॥पाटकीटतेंहोइतेहितेंपाटंबररुचिर॥कृमिपालैसबकोइपरमअपावन
प्रानसम॥९५॥स्वारथसांचजीवकहुँयेहा॥मनक्रमबचनरामपदनेहा॥सोइपावनसो
इसुभगसरीरा॥जोतनुपाइभजियरघुबीरा॥रामबिमुखलहिबिधिसमदेही॥कबिकोबि
दनप्रसंसहितेही॥रामभगतिएहितनउरजामी॥तातेमोहिपरमप्रियस्वामी॥तजौंन
तननिजइछामरना॥तनबिनुबेदभजननहिबरना॥प्रथममोहमोहिबहुतबिगोवा॥
रामबिमुखसुखकबहुंनसोवा॥नानाजन्मकर्मपुनिनाना॥किएजोगजपतपमखदाना॥

उ०
४३

कवनजोनिजनमेउँजहँनाहीं॥मैंषगेसभ्रमिभ्रमिजगमाहीं॥देषेउँकरिसबकरमगो
साईं॥सुषीनभएउँअबहिकीनाईं॥सुधिमोहिनाथजन्मबहुकेरी॥सिवप्रसादमतिमो
हनघेरी॥दोहा॥ प्रथमजन्मकेचरितअबकहौंसुनहुविहगेस॥सुनिप्रभुपदरतिउपजे
जातेंमिटहिकलेस॥पूर्वकल्पएकप्रभुजुगकलिजुगमलमूल॥नरअरुनारिअधर्मरत
सकलनिगमप्रतिकूल॥९१॥तेहिकलिजुगकोसलपुरजाई॥जनमतभएउँसूद्रतनु
पाई॥सिवसेवकमनक्रमअरुबानी॥आनदेवनिंदकअभिमानी॥धनमदमत्तपरमबाचा
ला॥उग्रबुद्धिउरदंभबिसाला॥जदपिरहेउँरघुपतिरजधानी॥तदपिनकछुमहिमात
बजानी॥अबजानामैंअवधप्रभावा॥निगमागमपुरानअसगावा॥कवनेहुजन्मअव ४३
धबसजोई॥रामपरायनसोपरिहोई॥अवधप्रभावजानतबप्रानी॥जबउरबसहिरामध

नृपानी॥ सो कलिकाल कठिन उरगारी॥ पाप परायन सब नर नारी॥ दोहा॥ कलिमल ग्र
से धर्म सब लुप्त भए सदग्रंथ॥ दंभिन्ह निज मति कल्पि करि प्रगट किए बहु पंथ॥ भए लो
ग सब मोहबस लोभ ग्रसे सुभ कर्म॥ सुनु हरिजान ग्यान निधि कहौं कछुक कलिधर्म॥ ९८
बरन धर्म नहिं आश्रम चारी॥ श्रुति बिरोध रत सब नर नारी॥ द्विज श्रुति बेचक भूप प्रजासन
कोउ नहिं मान निगम अनुसासन॥ मारग सोइ जा कहँ जोइ भावा॥ पंडित सोइ जो गाल ब
जावा॥ मिथ्यारंभ दंभ रत जोई॥ ता कहँ संत कहै सब कोई॥ सोइ सयान जो परधन हारी॥ जो
कर दंभ सो बड आचारी॥ जो कह झूठ मसखरी जाना॥ कलिजुग सोइ गुनवंत बखाना॥ निरा
चार जो श्रुति पथ त्यागी॥ कलिजुग सोइ ग्यानी सो बिरागी॥ जाके नख अरु जटा बिसाला॥ सो
इ तापस प्रसिद्ध कलिकाला॥ दोहा॥ असुभ बेष भूषन धरे भच्छाभच्छ जे खाहिं॥ तेइ जो

ॐ गी तेइ सिद्ध नर पुज्य ते कलिजुग माहिं ॥ सोरठा ॥ अपकारी चार तिन्ह कर गौरव मान्य ते जे

४४ इ ॥ मन क्रम वचन लवार तेइ बकता कलिकाल महुँ ॥ चौ० ॥ नारि विवस नर सकल गो

साईं ॥ नाचहिं नट मरकट की नाईं ॥ सूद्र द्विजन्ह उपदेसहिं ज्ञाना ॥ मेलि जनेउ लेहिं

कुदाना ॥ सब नर काम लोभ रत क्रोधी ॥ देव विप्र श्रुति संत विरोधी ॥ गुन मंदिर सुंदर पति

त्यागी ॥ भजहिं नारि पर पुरुष अभागी ॥ सौभागिनी विभूषन हीना ॥ विधवन्ह के संगार न

वीना ॥ गुर सिष वधिर अंध का लेषा ॥ एक न सुनै एक नहिं देषा ॥ हरै सिष्य धन सोक न हर

ई ॥ सो गुर घोर नरक महँ परई ॥ मातु पिता बालकन्हि बोलावहिं ॥ उदर भरै सोइ धर्म सि

षावहिं ॥ दोहा ॥ ब्रह्मज्ञान विनु नारि नर कहहिं न दूसरि बात ॥ कौडी लागि लोभ बस करहिं ४४

विप्र गुर घात ॥ बादहिं सूद्र द्विजन्ह सन हम तुम्ह ते कछु घाटि ॥ जानै ब्रह्म सो विप्रवर आँ

षिदिषावहिंडाँटि॥१०१॥परत्रियलंपटकपटसयाने॥मोहद्रोहममतालपटाने॥तेइअ
भेदवादीज्ञानीनर॥देषामैंचरित्रकलिजुगकर॥आपुगएअरुतिन्हहूघालहिं॥जेकहुँ
सतमारगप्रतिपालहिं॥कल्पकल्पभरिएकएकनरका॥परहिंजेदूषहिंश्रुतिकरितरका॥
जेबरनाधमतेलिकुम्हारा॥स्वपचकिरातकोलकलवारा॥नारिमुईगृहसंपतिनासी॥
मूडमुडाइहोहिंसंन्यासी॥तेविप्रन्हसनआपुपुजावहिं॥उभयलोकनिजहाथनसा
वहिं॥विप्रनिरछरलोलुपकामी॥निराचारसठब्रृषलीस्वामी॥सूद्रकरहिंजपतपव्रत
नाना॥वैठिवरासनकहहिंपुराना॥सबनरकल्पितकरहिंअचारा॥जाइनवरनिअनी
तिअपारा॥दोहा॥ भएवरनसंकरकलिभिन्नसेतुसवलोग॥करहिंपापपावहिंदुष
भयरुजसोकवियोग॥श्रुतिसंमतहरिभक्तिपथसंजुतविरतिविवेक॥तेहिंनचलहिंनर

उ०
५५ मोहवसकल्पहिंपंथअनेक॥१०४॥तोमर॥बहुदामसँवारहिंधामजती॥ विषयाहरिलीन्हिरहीबिरती॥तपसीधनवंतदरिद्रगृही॥कलिकौतुकतातनजातकही॥कुलवंतनिकारहिंनारिसती॥गृहआनहिंचेरिनिवेरिगती॥सुतमानहिंमातुपितातवलौं॥अवलाननदीखनहींजवलौं॥ससुरारिपिआरिलगीजवतें॥रिपुरूपकुटुंवभएतवतें॥नृपपापपरायनधर्मनहीं॥करिदंडविडंवप्रजानितहीं॥धनवंतकुलीनमलीनअपी॥द्विजचिन्हजनेउउघारतपी॥नहिंमानपुराननवेदहिजो॥हरिसेवकसंतसहीकलिसो॥कविवृंदउदारदुनीनसुनी॥गुनदूषकव्रातनकोपिगुनी॥कलिवारहिंवारदुकालपरै॥विनुअन्नदुखीसवलोगमरै॥दोहा॥ः सुनुखगेसकलिकपटहठदंभद्वेषपाषंड॥मानमोहमारादिमदव्यापिरहेव्रह्मंड॥तामसधर्मकरहिंनरजपतपमखव्रतदान॥देवन ५५

रैबैधरनीकरतनजामहिध्यान॥१०४॥अवलाकचभूषनभूरिछुधा॥धनहीनदुखीममता
बहुधा॥सुखचाहहिंमूढनधर्मरता॥मतिथोरिकठोरिनकोमलता॥नरपीडितरोगन
भोगकही॥अभिमानविरोधअकारनही॥लघुजीवनसंबतपंचदसा॥कलपांतननास
गुमानुअसा॥कलिकालविहालकिएमनुजा॥नहिमानतकोउअनुजातनुजा॥नहि
तोषविचारनसीतलता॥सबजातिकुजातिभएमगता॥इरषापरुषाछरलोलुपता
भरिपूरिरहीसमताविगता॥सबलोगवियोगविसोकहये॥बरनाश्रमधर्मअचारग
ये॥दमदानदयानहिजानपनी॥जडतापरवंचनतातिघनी॥तनपोषकनारिनरा
सगरे॥परनिंदकजेजगमोबगरे॥दोहा॥ सुनुब्यालारिकालकलिमलअवगुनआगा
र॥गुनौबहुतकलिजुगकरबिनुप्रयासनिस्तार॥कृतजुगत्रेताद्वापरपूजामषअरुजो

उ०
४६ ग॥ जोगतिहोइसोकलिहरिनामतेपावहिलोग॥ १०३॥ क्रतजुगसबजोगीबिज्ञानी॥ करि
हरिध्यानतरहिभवप्रानी॥ त्रेताबिबिधिजज्ञनरकरहीं॥ प्रभुहिसमर्पिकर्मभवतरहीं॥
द्वापरकरिरघुपतिपदपूजा॥ नरभवतरहिउपावनदूजा॥ कलिजुगकेवलहरिगुनगाहा॥
गावतनरपावहिंभवथाहा॥ कलिजुगजोगनजज्ञनज्ञाना॥ एकअधाररामगुनगाना॥ स
बभरोसतजिजोभजरामहि॥ प्रेमसमेतगावगुनग्रामहिं॥ सोइभवतरकछुसंसयनाहीं॥
नामप्रतापप्रगटकलिमाहीं॥ कलिकरएकपुनीतप्रतापा॥ मानसपुन्यहोहिंनहिंपापा॥
दोहा॥ कलिजुगसमजुगआननहिजौंनरकरबिस्वास॥ गाइरामगुनगनबिमलभवत
रबिनहिप्रयास॥ प्रगटचारिपदधर्मकेकलिमहुएकप्रधान॥ जेनकेनबिधिदीन्हेंदा ४६
नकरैकल्यान॥ १०४॥ क्रतजुगधर्महोहिंसबकेरे॥ हृदयराममायाकेप्रेरे॥ सुद्धसत्वस

मताविज्ञाना॥कृतप्रभावप्रसन्नमनजाना॥सत्वबहुतरजकछुरतिकर्मा॥सबविधिसुख
त्रेताकरधर्मा॥बहुरजस्वल्पसत्वकछुतामस॥द्वापरधर्महरषभयमानस॥तामसबहुत
रजोगुनथोरा॥कलिप्रभावविरोधचहुँओरा॥बुधजुगधर्मजानिमनमाहीं॥तजिअधर्म
रतिधर्मकराहीं॥कालकर्मनहिंव्यापहिंताही॥रघुपतिचरनप्रीतिअतिजाही॥नटकृत
विकटकपटखगराया॥नटसेवकहिनव्यापैमाया॥दोहा॥हरिमायाकृतदोषगुनवि
नुहरिभजननजाहिं॥भजियरामतजिकामसबअसविचारिमनमाहिं॥तेहिकलिकाल
बरषबहुबसेउँअवधविहगेस॥परेउदुकालविपतिवसतबमैगएउँविदेस॥१०५॥गएउँ
उजेनीसुनुउरगारी॥दीनमलीनदरिद्रदुखारी॥गएँकालकछुसंपतिपाई॥तहँपु
निकरौंसंभुसेवकाई॥विप्रएकवैदिकसिवपूजा॥करैसदातेहिकाजनदूजा॥परमसा

उ० धुपरमारथबिंदक॥ संभु उपासक नहि हरि निंदक॥ तेहि सेवौं मैं कपट समेता॥ द्विज दया
ल अति नीति निकेता॥ वाहिज नम्र देषि मोहि साँई॥ विप्र पढाव पुत्र की नाईं॥ संभु मं
त्र मोहि द्विजवर दीन्हा॥ सुभ उपदेस विविधि विधि कीन्हा॥ जपौं मंत्र सिव मंदिर जाई॥
हृदयं दंभ अहमिति अधिकाई॥ दोहा॥ मैं षल मल संकुल मति नीच जाति वस मोह॥ ८४
हरिजन द्विज देषें जरौं करौं विष्नु कर द्रोह॥ सोरठा॥ गुर नित मोहि प्रवोध दुषित देषि
आचरन मम॥ मोहि उपजै अति क्रोध दंभिहि नीति कि भावई॥ १०६॥ एक बार गुर ली
न्ह बोलाई॥ मोहि नीति बहु भाँति सिषाई॥ सिव सेवा कर फल सुत सोई॥ अविरल भक्ति
राम पद होई॥ रामहि भजहिं तात सिव धाता॥ नर पावर कै केतिक वाता॥ जासु चरन अज
सिव अनुरागी॥ तासु द्रोह सुष चहसि अभागी॥ हर कहुं हरि सेवक गुर कहेउ॥ सुनि षग

नाथहृदयममदहेउ॥ अधमजातिमैविद्यापाए॥ भएउजथाअहिदूधपिआए॥ मा
नीकुटिलकुभागयकुजाती॥ गुरकरद्रोहकरौंदिनराती॥ अतिदयालगुरस्वल्पनक्रोधा
पुनिपुनिमोहिसिखावसुबोधा॥ जेहितेनीचवडाईपावा॥ सोप्रथमहिहतिताहिनसावा
धूमअनलसंभवसुनुभाई॥ तेहिवुझावघनपदवीपाई॥ रजमगपरीनिरादररहई॥ सव
करपदप्रहारनितसहई॥ मरुतउडावप्रथमतेहिभरई॥ पुनिनृपनयनकिरीटन्हिप
रई॥ सुनुखगपतिअससमुझिप्रसंगा॥ वुधनहिकरहिअधमकरसंगा॥ कविकोविदगाव
हिअसिनीती॥ खलसनकलहनभलनहिप्रीती॥ उदासीननितरहियगोसांई॥ खलप
रिहरियस्वानकीनांई॥ मैखलहृदयकपटकुटिलाई॥ गुरुहितकहैनमोहिसुहाई॥
दोहा॥ः एकवारहरमंदिरजपतरहेउसिव॥ गुरआएउअभिमानतेउठिनहिकी
नाम

उ० न्ह प्रनाम॥ सो दयाल नहि कहेउ कछु उर न रोष लवलेस॥ अति अघ गुर अपमान
५८ ता सहि नहि सके महेस॥१०७॥ मंदिर मांझ भई नभ बानी॥ रे हतभाग्य अग्य अभिमानी
जद्यपि तव गुर के नहि क्रोधा॥ अति दयाल चित सम्यक बोधा॥ तदपि साप सठ देहौं तो
ही॥ नीति विरोध सोहाइ न मोही॥ जौं नहि दंड करौं खल तोरा॥ भ्रष्ट होइ श्रुति मार्ग
मोरा॥ जे सठ गुर सन इरषा करहीं॥ रौरव नरक कोटि जुग परहीं॥ त्रिजग जोनि पुनि ध
रहि सरीरा॥ अयुत जन्म भरि पावहि पीरा॥ बैठि रहेसि अजगर इव पापी॥ सर्प होहि ख
ल मल मति व्यापी॥ महा बिटप कोटर महु जाई॥ रहु अधमाधम अधगति पाई॥ दोहा॥
हाहाकार कीन्ह गुर दारुन सुनि सिव साप॥ कंपित मोहि विलोकि अति उर उपजा परिताप ५८
करि दंडवत सप्रेम द्विज सिव सन्मुख कर जोरि॥ बिनय करत गदगद स्वर समुझि घोर गति

मो०सि० ॥ १९५ ॥ भुजंगप्रयात ॥ नमामीशमीशाननिर्वाणरूपं ॥ विभुंव्यापकंब्रह्मवेदस्वरूपं
निजंनिर्गुणंनिर्विकल्पंनिरीहं ॥ चिदाकाशमाकाशवासंभजेहं ॥ १ ॥ निराकारमोंकारमू
लंतुरीयं ॥ गिराज्ञानगोतीतमीशंगिरीशं ॥ करालंमहाकालकालंकृपालं ॥ गुणागारसंसा
रपारंनतोहं ॥ २ ॥ तुषाराद्रिसंकाशगौरंगभीरं ॥ मनोभूतकोटिप्रभाश्रीशरीरं ॥ स्फुरन्मौ
लिकल्लोलिनीचारुगंगा ॥ लसद्भालबालेंदुकंठेभुजंगा ॥ ३ ॥ चलत्कुंडलंभ्रूसुनेत्रंविशा
लं ॥ प्रसन्नाननंनीलकंठंदयालुं ॥ मृगाधीशचर्मांबरंमुंडमालं ॥ प्रियंशंकरंसर्वनाथं
भजामि ॥ ४ ॥ प्रचंडंप्रकृष्टंप्रगल्भंपरेशं ॥ अखंडंअजंभानुकोटिप्रकाशं ॥ त्रिधाशूलनि
र्मूलनंशूलपाणिं ॥ भजेहंभवानीपतिंभावगम्यं ॥ ५ ॥ कलातीतकल्याणकल्पांतका
री ॥ सदासज्जनानंददातापुरारी ॥ चिदानंदसंदोहमोहापहारी ॥ प्रसीदप्रसीदप्रभो

उ० मन्मथारी॥६॥नयावदुमानाथपादारविंदं॥भजंतीहलोकेपरेवानराणां॥नतावत्सुखं
४८ सांतिसंतापनासं॥प्रसीदप्रभोसर्वभूताधिवासं॥७॥नजानामियोगंजपंनैवपूजां॥न
तोहंसदासर्वदासंभुतुभ्यं॥जराजन्मदुःखौघतातप्यमानं॥प्रभोपाहिआपन्नमामी
शशंभो॥८॥रुद्राष्टकमिदंप्रोक्तंविप्रेणहरतोषये॥येपठंतिनराभक्त्यातेषांसंभुःप्र
सीदति॥९॥दोहा॥ सुनिबिनतीसर्वज्ञसिवदेषिविप्रअनुरागु॥पुनिमंदिरनभवानीभ
इद्विजवरवरमागु॥जौंप्रसन्नप्रभुमोपरनाथदीनपरनेहु॥निजपदभक्तिदेइप्रभुपु
निदूसरवरदेहु॥तवमायावसजीवजडसंततफिरैभुलान॥तेहिपरक्रोधनकरियप्रभु
कृपासिंधुभगवान॥संकरदीनदयालअबएहिपरहोउकृपाल॥सापअनुग्रहहोइजे ४८
हिंनाथथोरेहीकाल॥१०८॥इहिकाहोइपरमकल्याना॥सोइकरहुअबकृपानिधा॥

ना॥ विप्रगिरासुनिपरहितसानी॥ एवमस्तुइतिभइनभवानी॥ जदपिकीन्हइहिदा
रुनपापा॥ मैपुनिदीन्हक्रोधकरिसापा॥ तदपितुम्हारिसाधुतादेषी॥ करिहौंएहिपर
कृपाविसेषी॥ छमासीलजेपरउपकारी॥ तेद्विजमोहिप्रियजथाषरारी॥ मोरस्रापद्वि
जव्यर्थनजाइहि॥ जन्मसहस्रअवस्यिहपाइहि॥ जन्मतमरतदुसहदुषहोई॥ ए
हिस्वल्पौनहिव्यापिहिसोई॥ कवनेहुजन्ममिटिहिनहिज्ञाना॥ सुनहिसूद्रममवच
नप्रमाना॥ रघुपतिपुरीजन्मतवभएऊ॥ पुनितैममसेवामनदएऊ॥ पुरीप्रभावअनुग्र
हमोरे॥ रामभगतिउपजिहिउरतोरे॥ सुनुममवचनसत्यअवभाई॥ हरितोषनव्रतद्वि
जसेवकाई॥ अवजनिकरहिविप्रअपमाना॥ जानेसुसंतअनंतसमाना॥ इंद्रकुलिस
ममसूलविसाला॥ कालदंडहरिचक्रकराला॥ जोइन्हकरमारानहिमरई॥ विप्रद्रोह

उ० पावकसोजरई ॥ असबिबेकराषेहमनमाहीं ॥ तुम्हकहँजगदुर्लभकछुनाहीं ॥ औरौए
५० कआसिषामोरी ॥ अप्रतिहतगतिहोइहितोरी ॥ दोहा ॥ मुनिसिख्वचनहरषिगुरुरकम
सुइतिभाषि ॥ मोहिप्रबोधिगारउ ।८हसंभुचरन अराधि ॥ प्रेरितकालबिधिगिरिजाइ
भएउँभव्याल ॥ पुनिप्रयासबिनुसोतनुतजेउ गएकछुकाल ॥ जोइतनुधरौंतजौंपुनि
अनायासहरिजान ॥ जिमिनूतनपटपाहिरैनरपरिहरैपुरान ॥ सिवराषीश्रुतिनीतिअ
रुमैंनहिपावकलेस ॥ एहिबिधिधरेउबिबिधितनुज्ञाननगएउषगेस ॥ ११० ॥ त्रिजगदे
वनरजोइतनुधरउँ ॥ तहँतहँरामभजनअनुसरउँ ॥ एकसूलमोहिबिसरनकाउ ॥
गुरुकरकोमलसीलसुभाउ ॥ चरमदेहद्विजकैमैंपाई ॥ सुरदुर्लभपुराननश्रुतिगाई ॥ ५०
खेलौंतहूँबालकन्हमीला ॥ करौंसकलरघुनायकलीला ॥ प्रौढभएमोहिपितापढा

वा॥ समुझौं सुनौं गुनौं नहि भावा॥ मन ते सकल वासना भागी॥ केवल राम चरन लय लागी॥
कहु खगेस अस कवन अभागी॥ खरी सेव सुरधेनुहि त्यागी॥ प्रेम मगन मोहि कछु न सुहाई॥
हारेउ पिता पढाइ पढाई॥ भए कालवस जव पितु माता॥ मैं वन गएउँ भजन जनत्राता॥ जे
हँ जहँ विपिन मुनीस्वर पावौं॥ आश्रम जाइ जाइ सिरु नावौं॥ वूझौं तिन्हहि राम गुन गाहा॥
कहहि सुनौं हरषित खगनाहा॥ सुनत फिरौं हरि गुन अनुवादा॥ अव्याहत गति संभु प्रसा
दा॥ छूटी त्रिविधि ईषना गाढी॥ एक लालसा उर अति वाढी॥ राम चरन वारिज जव देखौं॥
तव निज जन्म सुफल करि लेखौं॥ जेहि पूछौं सोइ मुनि अस कहई॥ ईस्वर सर्व भूतमय अ
हई॥ निर्गुन मत नहि मोहि सुहाई॥ सगुन ब्रह्म रति उर अधिकाई॥ दोहा॥ गुरु के वच
न सुरति करि राम चरन मनु लाग॥ रघुपति जस गावत फिरौं छन छन नव अनुराग

ॐ मेरुसिषरवटछायामुनिलोमसआसीन॥ देषिचरनसिरनाएउँबचनकहेउँअ
५१ तिदीन॥ सुनिममबचनबिनीतमृदुमुनिकृपालषगराज॥ मोहिसादरपूछतभए
द्विजआएहुकेहिकाज॥ तबमैंकहाकृपानिधितुम्हसर्वग्यसुजान॥ सगुनब्रह्मअ
राधनमोहिकहहुभगवान॥ ११०॥ तबमुनीसरघुपतिगुनगाथा॥ कहेकछुकसा
दरषगनाथा॥ ब्रह्मग्यानरतमुनिबिग्यानी॥ मोहिपरमअधिकारीजानी॥ लागेकरन
ब्रह्मउपदेसा॥ अजअद्वैतअगुनहृदयेसा॥ अकलअनीहअनामअरूपा॥ अनु
भवगम्यअषंडअनूपा॥ मनगोतीतअमलअबिनासी॥ निर्बिकारनिरवधिसुषरा
सी॥ सोतैंताहितोहिनहिंभेदा॥ बारिबीचिइवगावहिंबेदा॥ बिबिधिभाँतिमोहिमुनि ५१
समुझावा॥ निर्गुनमतममहृदयनआवा॥ पुनिमैंकहेउँनाइपदसीसा॥ सगुनउपा

सनकहहु मुनीसा॥ राम भगति जल मम मन मीना॥ किमि बिलगाइ मुनीस प्रबीना॥ सो
इ उपदेस कहहु करि दाया॥ निज नयनन्हि देखौं रघुराया॥ भरि लोचन बिलोकि अव
धेसा॥ तब सुनिहौं निर्गुन उपदेसा॥ मुनि पुनि कहि हरिकथा अनूपा॥ षंडि सगुन मत
अगुन निरूपा॥ तब मैं निर्गुन मत करि दूरी॥ सगुन निरूपौं करि हठ भूरी॥ उत्तर प्रति उ
त्तर मैं कीन्हा॥ मुनि तन भए क्रोध के चीन्हा॥ सुनु प्रभु बहुत अवग्या कीये॥ उपज क्रोध
ग्यानिन्ह के हीये॥ अति संघरषन जौं कर कोई॥ अनल प्रगट चंदन ते होई॥ दोहा॥ बारं
बार सकोप मुनि करै निरूपन ग्यान॥ मैं अपने मन बैठ तब करौं बिबिधि अनुमान॥ क्रोध कि ८
द्वैत बुद्धि बिनु द्वैत कि बिनु अग्यान॥ मायावस परिछिन्न जड जीव कि ईस समान॥ ११२
कबहु कि दुख सब कर हित ताके॥ तेहि कि दरिद्र परस मनि जाके॥ परद्रोही कि होइ निःसं

उ० का॥ कामी पुनि कि रहहिं अकलंका॥ बंस कि रह द्विज अनहित कीन्हे॥ कर्म कि होहिं स्वरू-
पहि चीन्हे॥ काहू सुमति कि खल संग जामी॥ सुभ गति पाव कि परत्रिय गामी॥ भव कि पर-
५२ हि परमात्म बिंदक॥ सुखी कि होहिं कबहु हरि निंदक॥ राजु कि रहै नीति बिनु जाने॥ अघ
कि रहहिं हरि चरित बषाने॥ पावन जस कि पुन्य बिनु होई॥ बिनु अघ अजस कि पावै को-
ई॥ लाभ कि कछु हरि भगति समाना॥ जेहि गावहिं श्रुति संत पुराना॥ हानि कि जग ए-
हि सम कछु भाई॥ भजिय न रामहि नर तनु पाई॥ अघ कि पिसुनता सम कछु आना॥ ध-
र्म कि दया सरिस हरिजाना॥ एहि बिधि अमिति जुगुति मन गुनेउं॥ मुनि उपदेस न सा-
दर सुनेउं॥ पुनि पुनि सगुन पछ मैं रोपा॥ तब मुनि बोलेउ बचन सकोपा॥ मूढ परम सिष ५२
देउं न मानसि॥ उत्तर प्रति उत्तर बहु आनसि॥ सत्य बचन बिस्वास न करही॥ बायस

इव सब ही ते डरहीं॥ सठ स्वपछ तव हृदय बिसाला॥ सपदि होहि पच्छी चंडाला॥ लीन्ह स्रा
प मैं सीस चढाई॥ नहि कछु भय न दीनता आई॥ दोहा॥ तुरत भएउँ मैं काग तब पुनि मुनि
पद सिरु नाइ॥ सुमिरि राम रघुबंसमनि हरषित चलेउँ उडाइ॥ उमा जे राम चरन रत बिग
त काम मद क्रोध॥ निज प्रभुमय देखहि जगत केहि सन करहि बिरोध॥ ११२॥ सुनु खगेस न
हि कछु रिषि दूषन॥ उर प्रेरक रघुबंस बिभूषन॥ कृपासिंधु मुनि मति करि भोरी॥ लीन्ही
प्रेम परीछा मोरी॥ मन बच क्रम मोहि निज जन जाना॥ मुनि मति पुनि फेरी भगवाना॥ रि
षि मम महत सीलता देखी॥ राम चरन बिस्वास बिसेषी॥ अति बिसमय पुनि पुनि पछिता
ई॥ सादर मुनि मोहि लीन्ह बोलाई॥ मम परितोष बिबिधि बिधि कीन्हा॥ हरषित राममं
त्र दीन्हा॥ बालकरूप राम कर ध्याना॥ कहेउ मोहि मुनि कृपानिधाना॥ सुंदर सुख

उ० द मोहि अति भावा॥ सो प्रथमहि मैं तुम्हहि सुनावा॥ मुनि मोहि कछुक काल तहँ राखा॥
५३ रामचरितमानस तब भाषा॥ सादर मोहि यह कथा सुनाई॥ पुनि बोले मुनि गिरा सुहा
ई॥ रामचरित सर गुप्त सुहावा॥ संभु प्रसाद तात मैं पावा॥ तोहि निज भक्त राम कर जानी॥
ताते मैं सब कहेउँ बखानी॥ राम भक्ति जिन्ह के उर नाहीं॥ कबहुँ न तात कहिय तिन्ह ति
न्ह पाहीं॥ मुनि मोहि बिबिध भाँति समुझावा॥ मैं सप्रेम मुनि पद सिर नावा॥ निज कर क
मल परसि मम सीसा॥ हरषित आसिष दीन्ह मुनीसा॥ राम भगति अबिरल उर तोरे॥ बसि
हि सदा प्रसाद अब मोरे॥ दोहा॥ सदा राम प्रिय होहु तुम्ह सुभ गुन भवन अमान॥ काम
रूप इछामरन ग्यान बिराग निधान॥ जेहि आश्रम तुम्ह बसब पुनि सुमिरत श्री भगवंत॥
ब्यापिहि तहँ न अबिद्या जोजन एक प्रजंत॥ ११४॥ काल कर्म गुन दोष सुभाउ॥ कछु दुख ५३

तुम्हहिं न व्यापिहि काउ ॥ राम रहस्य ललित विधि नाना ॥ गुप्त प्रगट इतिहास पुराना ॥ बि-
नु श्रम तुम्ह जानव सब सो ॥ नित नव नेह राम पद होउ ॥ जो इच्छा करिहहु मन माहीं ॥
हरि प्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं ॥ सुनि मुनि आसिष सुनु मति धीरा ॥ ब्रह्मगिरा भइ गगन
गंभीरा ॥ एवमस्तु तव बच मुनि ज्ञानी ॥ यह मम भगत कर्म मन बानी ॥ सुनि नभगिरा हर-
ष मोहि भयउ ॥ प्रेम मगन सब संसय गयउ ॥ करि बिनती मुनि आयसु पाई ॥ पद स-
रोज पुनि पुनि सिरु नाई ॥ हरष सहित एहिं आश्रम आयउ ॥ प्रभु प्रसाद दुर्लभ बर पायउ
॥ इहाँ बसत मोहि सुनु खग ईसा ॥ बीते कलप सात अरु बीसा ॥ करउँ सदा रघुपति गुन गा-
ना ॥ सादर सुनहिं बिहंग सुजाना ॥ जब जब अवधपुरीं रघुबीरा ॥ धरहिं भगत हित मनुज
सरीरा ॥ तब तब जाइ राम पुर रहऊ ॥ सिसुलीला बिलोकि सुख लहऊ ॥ पुनि उर राखि

ॐ ५८ रामसिसुरूपा॥ निजआश्रमआयौं षगभूपा॥ कथासकलमैं तुम्हहि सुनाई॥ कागदेह
जेहिकारनपाई॥ कहे उँतातसवप्रस्नतुम्हारी॥ रामभगतिमहिमाअतिभारी॥ दोहा॥
तातेयहतनमोहिप्रियभए उरामपदनेह॥ निजप्रभुदरसनपाए उँगए सकलसंदे
ह॥ भगतिपछ्छहठकरिरहे उँदीन्हमहारिषिसापु॥ मुनिदुर्लभवरपाए उँदेषहुभ
जनप्रताप॥ ११६॥ जेअसिभगतिजानिपरिहरहीं॥ केवलज्ञानहेतुश्रमकरहीं॥ तेज
डकामधेनुग्रहत्यागी॥ षोजतआककिरहिपयलागी॥ सुनुषगेसहरिभगतिविहाई॥
जेसुषचाहहिंआनउपाई॥ तेसठमहासिंधुविनुतरनी॥ पैरिपारचाहहिंजडकरनी॥
सुनिभसुंडिकेवचनभवानी॥ बोले उगरुडहरषिमदुवानी॥ तवप्रसादप्रभुममउ ५८
माहीं॥ संसयसोकमोहभ्रमनाहीं॥ सुने उँपुनीतरामगुनग्रामा॥ तुम्हरीकृपाल

हे अविश्रामा॥ एक बात प्रभु पूछौं तोही॥ कहहु बुझाइ कृपानिधि मोही॥ कहहिं संत मु
नि वेद पुराना॥ नहिं कछु दुर्लभ ज्ञान समाना॥ सोइ मुनि तुम्ह सन कहेउ गोसाईं॥ नहिं
आदरेहु भगति की नांई॥ ज्ञानहि भक्तिहि अंतर केता॥ सकल कहहु प्रभु कृपानिकेता॥
सुनि उरगारि वचन सुष माना॥ सादर बोले उ काग सुजाना॥ भक्तिहि ज्ञानहि नहि कछु
भेदा॥ उभय हरहिं भव संभव षेदा॥ नाथ मुनीस कहहिं कछु अंतर॥ सावधान सो
सुनु विहंगवर॥ ज्ञान विराग जोग विज्ञाना॥ ए सब पुरुष सुनहु हरिजाना॥ पुरुष प्रताप
प्रबल सब भांती॥ अबला अबल सहज जड जाती॥ दोहा॥ पुरुष त्यागि सक नारिहि जो
विरक्त मति धीर॥ न तु कामी विषयावस विमुष जो पद रघुवीर॥ सोरठा॥ सो उ मुनि ज्ञा
ननिधान मृगनयनी विधुमुष निरषि॥ विवस होइ हरिजान नारि विष्णु माया प्रगट॥

उ०

५५

११७ ॥ इहाँ न पछुपात कछु राषौं ॥ वेद पुरान संत मत भाषौं ॥ मोह न नारि नारि के रूपा ॥ प
न्नगारि यह रीति अनूपा ॥ माया भगति सुनहु तुम्ह दोऊ ॥ नारि वर्ग जानै सब कोऊ ॥ पु
नि रघुवीरहि भक्ति पियारी ॥ माया षलु नर्तकी विचारी ॥ भक्तिहि सानुकूल रघुराया ॥ ताते
तेहि डरपति अति माया ॥ राम भगति निरुपम निरुपाधी ॥ वसै जासु उर सदा अवाधी ॥
तेहि विलोकि माया सकुचाई ॥ करि न सकै कछु निज प्रभुताई ॥ अस विचारि जे मुनि विज्ञा
नी ॥ जाचहि भक्ति सकल सुषखानी ॥ दोहा ॥ यह रहस्य रघुनाथ कर वेगि न जानै कोइ ॥
जो जानै रघुपति कृपा सपनेहु मोह न होइ ॥ औरौ ज्ञान भक्ति कर भेद सुनहु सुप्रवीन ॥ जो
सुनि होइ रामपद प्रीति सदा अविछीन ॥ ११८ ॥ सुनहु तात यह अकथ कहानी ॥ समुझत ५५
वनै न जाइ वषानी ॥ ईश्वर अंस जीव अविनासी ॥ चेतन अमल सहज सुषरासी ॥ सो माया

बस भए उ गोसाँई॥ बंध्यो कीट मरकट की नाँई॥ जड़ चेतनहि ग्रंथि परि गई॥ जदपि मृषा
छूटत कठिनई॥ तब ते जीव भयउ संसारी॥ छूट न ग्रंथि न होइ सुखारी॥ श्रुति पुरान बहु
कहेउ उपाई॥ छूट न अधिक अधिक अरुझाई॥ जीव हृदय तम मोह बिसेषी॥ ग्रंथि छू
टि किमि परै न देषी॥ अस संजोग ईस जब करई॥ तबहुँ कदाचित सो निरुअरई॥ सात्विक श्रद्धा
धेनु सुहाई॥ जौं हरि कृपा हृदय बस आई॥ जप तप ब्रत जम नियम अपारा॥ जे श्रुति कह
सुभ धर्म अचारा॥ तेइ तृन हरित चरै जब गाई॥ भाव बच्छ सिसु पाइ पन्हाई॥ नोइ निबृत्ति
पात्र बिस्वासा॥ निर्मल मन अहीर निज दासा॥ परम धर्ममय पय दुहि भाई॥ अवटै अ
नल अकाम बनाई॥ तोष मरुत तब छमा जुड़ावै॥ धृति सम जावन देइ जमावै॥ मुदिता
मथै बिचार मथानी॥ दम अधार रजु सत्य सुबानी॥ तब मथि काढि लेइ नवनीता॥ बिम

उ०
५१

लविरागसुभगसुपुनीता॥दोहा॥ जोगअगिनिकरिप्रगटतवकर्मसुभासुभलाइ॥वुद्धि
सिरावैज्ञानघृतममतामलजरिजाइ॥तवविज्ञानरूपिनीवुद्धिविसदघृतपाइ॥चित्तदि
याभरिधरैदृढ़समतादियटिवनाइ॥तीनिअवस्थातीनिगुनतेहिकपासतेंकाढ़ि॥तू
लतुरीयसवारिपुनिवातीकरैसुगाढ़ि॥सोरठा॥ एहिविधिलेसैदीपतेजरासिविज्ञानम
य॥जातहिंजासुसमीपजरहिंमदादिकसलभसव॥११८॥सोहमस्मिइतिवृत्तिअखंडा।
दीपसिखासोइपरमप्रचंडा॥आतमअनुभवसुखसुप्रकासा॥तवभवमूलभेदभ्रमना
सा॥प्रवलअविद्याकरपरिवारा॥मोहआदितममिटैअपारा॥तवसोइवुद्धिपाइउजि
यारा॥उरगृहवैठिग्रंथिनिरुवारा॥छोरनग्रंथिपावजौंसोई॥तौयहजीवकृतारथ
होई॥छोरतग्रंथिजानिखगराया॥विघ्नअनेककरैतवमाया॥रिद्धिसिद्धिप्रेरैवहुभा

५१

ई॥ बुद्धिहि लोभ देखावहि आई॥ कलबल छल करि जाइ समीपा॥ अंचल बात बुझाव
हि दीपा॥ होइ बुद्धि जौं परम सयानी॥ तिन्ह तन चितव न अनहित जानी॥ जौं तेहि बिघ्न
बुद्धि नहि बाधी॥ तौ बहोरि सुर करहि उपाधी॥ इंद्री द्वार झरोषा नाना॥ तहँ तहँ सुर बैठे
करि थाना॥ आवत देषहि बिषय बयारी॥ ते हठि देहि कपाट उघारी॥ जब सो प्रभंजन
उर गृह जाई॥ तबहि दीप बिज्ञान बुझाई॥ ग्रंथि न छूटि मिटा सो प्रकासा॥ बुद्धि बिकल
ना
भइ बिषय बतासा॥ इंद्रिन्ह सुरन्ह न ज्ञान सुहाई॥ बिषय भोग पर प्रीति सदाई॥ बिषय स
मीर बुद्धि कृत भोरी॥ तेहि बिधि दीप को बार बहोरी॥ दोहा॥ तब फिरि जीव बिबिधि बिधि
पावै संसृति क्लेस॥ हरि माया अति दुस्तर तरि न जाइ बिहगेस॥ कहत कठिन समुझत
कठिन साधन कठिन बिबेक॥ होइ घुनाछर न्याय जौं पुनि प्रत्यूह अनेक॥ ११७॥ ज्ञा

उ०
५८

न पंथ कृपान कै धारा॥ परत खगेस होइ नहि बारा॥ जो निरबिघ्न पंथ निरबहई॥ सो कैव
ल्य परम पद लहई॥ अति दुर्लभ कैवल्य परम पद॥ संत पुरान निगम आगम बद॥ राम भ
जत सोइ मुक्ति गोसाईं॥ अनइछित आवै बरिआईं॥ जिमि थल बिनु जल रहि न सकाई॥ को
टि भांति कोउ करै उपाई॥ तथा मोछ सुख सुनु खगराई॥ रहि न सकै हरि भक्ति बिहाई॥ अ
स बिचारि हरि भक्त सयाने॥ मुक्ति निरादर भगति लोभाने॥ भक्ति करत बिनु जतन प्रयासा॥
संसृत मूल अविद्या नासा॥ भोजन करिय तृपिति हित लागी॥ जिमि सो असन पचवै जठरागी॥
असि हरि भक्ति सुगम सुखदाई॥ को अस मूढ़ न जाहि सोहाई॥ दोहा॥ सेवक सेव्य भाव
बिनु भव न तरिय उरगारि॥ भजहु राम पद पंकज अस सिद्धांत बिचारि॥ जो चेतन कहँ ज
ड करै जडहि करै चैतन्य॥ अस समर्थ रघुनायकहि भजहि जीव ते धन्य॥ ११९॥ कहेउँ ५८

ग्यानसिद्धांतबुझाई॥सुनहुभगतिमनिकैप्रभुताई॥रामभक्तिचिंतामनिसुंदर॥बसैगरु
डजाकेउरअंतर॥परमप्रकासरूपदिनराती॥नहिंकछुचहियदियाघृतबाती॥मोहद
रिद्रनिकटनहिंआवा॥लोभबातनहिंताहिबुझावा॥प्रबलअविद्यातममिटिजाई॥हा
रहिंसकलसलभसमुदाई॥खलकामादिनिकटनहिंजाहीं॥बसैभक्तिजाकेउरमाहीं॥
गरलसुधासमअरिहितहोई॥तेहिमनिबिनुसुखपावनकोई॥ब्यापहिंमानसरोगनभा
री॥जिन्हकेबससबजीवदुखारी॥रामभक्तिमनिउरबसजाके॥दुखलवलेसनसपनेहुंता
के॥चतुरसिरोमनितेइजगमाहीं॥जेमनिलागिसुजतनकराहीं॥सोमनिजदपिप्रगटज
गअहई॥रामकृपाबिनुनहिंकोउलहई॥सुगमउपाइपाइबेकेरे॥नरहतभाग्यदेहिं
भटभेरे॥पावनपर्वतवेदपुराना॥रामकथारुचिराकरनाना॥मर्मीसज्जनसुमतिकु

ॐ

दारी॥ ज्ञानविरागनयन उरगारी॥ भावसहितखोजै जो प्रानी॥ पावभक्तिमनिसबसुषषा
नी॥ मोरेंमनप्रभुअसविस्वासा॥ रामतेअधिकरामकरदासा॥ रामसिंधुघनसज्जनधी
५८ रा॥ चंदनतरुहरिसंतसमीरा॥ सबकरफलहरिभक्तिसोहाई॥ सोबिनुसंतनकाहूपा
ई॥ असविचारिजोइकरसतसंगा॥ रामभगतितेहिसुलभविहंगा॥ दोहा॥ ब्रह्मपे
योनिधिमंदरज्ञानसंतसुरआहि॥ कथासुधामथिकढहिंभगतिमधुरताजाहि॥ विर
तिचर्मअसिज्ञानमदलोभमोहरिपुमारि॥ जयपाइअसोहरिभगतिदेखुखगेसविचारि
१२२॥ पुनिसप्रेमबोलेउखगराउ॥ जौंकृपालमोहिऊपरभाउ॥ नाथमोहिनिजसे
वकजानी॥ सप्तप्रस्नममकहुवषानी॥ प्रथमहिकहहुनाथमतिधीरा॥ सबतेदुर्ले ५८
भकवनसरीरा॥ बडदुखकवनकवनसुखभारी॥ सोउसंछेपहिकहहुविचारी॥ संतअ

संतमहामुनुमहज्ञानुकु॥ निजकरसहजसुभावबखानु॥ कवनपुन्यश्रुतिविदितबिसा
ला॥ कहहुकवनअघपरमकराला॥ मानसरोगकहहुसमुझाई॥ तुम्हसर्वज्ञकृपाअ
धिकाई॥ तातसुनहुसादरअतिप्रीती॥ मैंसंछेपकहौंयहनीती॥ नरतनसमनहिंकवनि
उदेही॥ जीवचराचरजाचततेही॥ नरकस्वर्गअपवर्गनिसैनी॥ ज्ञानविरागभक्तिसुषद
नी॥ सोतनुधरिहरिभजहिंनजेनर॥ होहिंविषयरतमंदमंदतर॥ कांचुकिरिचबदलेते
लेहीं॥ करतेडारिपरसमनिदेहीं॥ नहिंदरिद्रसमदुषजगमाहीं॥ संतमिलनसमसुष
जगनाहीं॥ परउपकारबचनमनकाया॥ संतसहजसुभावषगराया॥ संतसहहिंदुष
परहितलागी॥ परदुषहेतुअसंतअभागी॥ भुर्जतरूसमसंतकृपाला॥ परहितनितसह
विपतिविसाला॥ सनइवखलपरबंधनकरई॥ षालकढाइविपतिसहिमरई॥ खलविनु

उ० स्वारथपरअपकारी॥ अहिमूषकइवसुनुउरगारी॥ परसंपदाविनासिनसाहीं॥ जिमि
५९८ ससिहतिहिमउपलविलाहीं॥ दुष्टउदयजगआरतिहेतू॥ जथाप्रसिद्धअधमग्रह
केतू॥ संतउदयसंततसुखकारी॥ विश्वसुखदजिमिइंदुतमारी॥ परमधर्मश्रुतिविदित
अहिंसा॥ परनिंदासमअघनगिरीसा॥ हरगुरनिंदकदादुरहोई॥ जन्मसहस्रपावत
नसोई॥ द्विजनिंदकबहुनरकभोगकरि॥ जगजन्मैवायससरीरधरि॥ सुरश्रुतिनिंदक
जेअभिमानी॥ रौरवनरकपरहिंतेप्रानी॥ होहिंउलूकसंतनिंदारत॥ मोहनिसाप्रिय
ज्ञानभानुगत॥ सबकेनिंदाजेजडकरहीं॥ तेचमगादुरहोइअवतरहीं॥ सुनहुतातअ
वमानसरोगा॥ जिन्हतेदुखपावहिंसबलोगा॥ मोहसकलव्याधिन्हकरमूला॥ तिन्ह ५९८
तेपुनिउपजहिंबहुसूला॥ कामवातकफलोभअपारा॥ क्रोधपित्तनितछातीजारा॥

प्रीतिकरहिंजौंतीनि उभाई॥ उपजैसन्निपातदुषदाई॥ विषयमनोरथदुर्गमनाना
तेसवसूलनामकोजाना॥ ममतादादुकंडुइरषाई॥ हरषविषादगरहवहुताई॥ परसु
षदेषिजरनिसोइछई॥ कुष्टदुष्टतामनकुटिलई॥ अहंकारअतिदुषदडमरुआ॥
दंभकपटमदमाननेहरुआ॥ त्रस्नाउदरवृद्धिअतिभारी॥ त्रिविधिईषनातरुनतिजा
री॥ जुगविधिज्वरमत्सरअविवेका॥ कहँलगिकहौंकुरोगअनेका॥ दोहा॥ एकव्याधि
वसनरमरहिंएअसाधिवहुव्याधि॥ पीडहिंसंततजीवकहुँसोकिमिलहैसमाधि॥ नेम
धर्मआचारतपग्यानजग्यजपदान॥ भेषजपुनिकोटिन्हनहिरोगजाहिहरिजान॥ १
२३॥ एहिविधिसकलजीवजगरोगी॥ सोकहरषभयप्रीतिवियोगी॥ मानसरोगकछुक
मैंगाए॥ हहिंसवकेलषिविरलेन्हपाए॥ जानेतेछीजहिंकछुपापी॥ नासनपावहिंज

७०

न परितापी॥ विषय कुपथ्य पाइ अंकुरे॥ मुनिहु हृदय का नर बापुरे॥ राम कृपा नासहि
सब रोगा॥ जौं एहि भांति बनै संजोगा॥ सदगुर वैद वचन विस्वासा॥ संजम यह न विषय
कै आसा॥ रघुपति भक्ति सजीवनि मूरी॥ अनूपान श्रद्धा मति पूरी॥ एहि विधि भलेहि
रोग नसाही॥ नाहि त जतन कोटि नहि जाही॥ जानिय तब मन विरुज गोसांई॥ जब उ
र बल विराग अधिकाई॥ सुमति छुधा बाढै नित नई॥ विषय आस दुर्बलता गई॥ विम
ल ज्ञान जल जब सो नहाई॥ तब रह राम भगति उर छाई॥ सिव अज सुक सनकादिक
नारद॥ जे मुनि ब्रह्म विचार विसारद॥ सब कर मत खगनायक एहा॥ करिय राम पद पंक
ज नेहा॥ श्रुति पुरान सब ग्रंथ कहाहीं॥ रघुपति भक्ति विना सुख नाहीं॥ कमठ पीठ जाम
हि बरु बारा॥ बंध्यासुत बरु काहुहि मारा॥ फूलहि नभ बरु बहुविधि फूला॥ जीव न लह

मुषहरिप्रतिकूला॥त्रषाजाइबरुमृगजलपाना॥बरुजामहिससुसीसबिषाना॥अंध
कारबरुरबिहिनसावै॥रामबिमुषनजीवसुषपावै॥हिमतेअनलप्रगटबरुहोई॥बिमुष
रामसुषपावनकोई॥दोहा॥ बारिमथेघृतहोइबरुसिकतातेबरुतेल॥बिनुहरिभजन
नभवतरियइहसिद्धांतअपेल॥मसकहिकरैबिरंचिप्रभुअजहिमसकतेहीन॥असबि
चारितजिसंसयरामहिभजहिप्रवीन॥१२४॥विनिश्चितंवदामिते॥नअन्यथावचांसि
मे॥हरिंनराभजंतिजे॥तिदुस्तरंतरंतिते॥१॥कहेउँनाथहरिचरितअनूपा॥ब्याससमा
सस्वमतिअनुरूपा॥श्रुतिसिद्धांतइहैउरगारी॥रामभजियसबकामबिसारी॥प्रभुरघु
पतितजिसेइयकाही॥मोहिसेसठपरममताजाही॥तुम्हबिज्ञानरूपनहिमोहा॥नाथ
कीन्हमोपरअतिछोहा॥पूछेहुरामकथाअतिपावनि॥सुकसनकादिसंभुमनभाव

उ० ६९

नि॥ सतसंगति दुर्लभ संसारा॥ निमिष दंड भरि एकौ बारा॥ देखु गरुड निज हृदय बिचारी
मैं रघुबीर भजन अधिकारी॥ सकुनाधम सब भांति अपावन॥ प्रभु मोहि कीन्ह बिदित जग
पावन॥ दोहा॥ आजु धन्य मैं धन्य अति जद्यपि सब बिधि हीन॥ निज जन जानि राम मोहि
संत समागम दीन्ह॥ नाथ जथामति भाषेउं राषेउं नहिं कछु गोइ॥ चरित सिंधु रघुनायक
थाह कि पावे कोइ॥ १२५॥ सुमिरि राम के गुनगन नाना॥ पुनि पुनि हरष भुसुंडि सुजाना॥
महिमा निगम नेति करि गाई॥ अतुलित बल प्रताप प्रभुताई॥ सिव अज पूज्य चरन रघु
ई॥ मो पर कृपा परम मृदुलाई॥ अस सुभाव कहुं सुनौं न देखौं॥ केहि षगेस रघुपति सम
लेषौं॥ साधक सिद्ध बिमुक्त उदासी॥ कबि कोबिद कृतग्य संन्यासी॥ जोगी सूर सुतापस ज्ञा
नी॥ धर्मनिरत पंडित बिज्ञानी॥ तरहिं न बिनु सेयें मम स्वामी॥ राम नमामि नमामि नमामी ६९

सरनगर मोसे अघरासी॥ होहिं सुद्ध नमामि अविनासी॥ दोहा॥ जासुनाम भवभेषजहर
नघोरत्रयसूल॥ सोकृपाल मोहि तोहि पर सदा रहौं अनुकूल॥ मुनि भसुंडि के बचन
सुभ देषि रामपदनेह॥ बोलेउ प्रेम सहित गिरा गरुड विगत संदेह॥ १२४॥ मैं कृतकृत्य भ
यउँ तव बानी॥ मुनि रघुवीर भक्ति रससानी॥ रामचरन नूतन रति भई॥ माया जनित विपति स र
व गई॥ मोह जलधि बोहित तुम्ह भए॥ मो कहँ नाथ विविध सुष दए॥ मो पहिं होइ न प्रति उप न
कारा॥ वंदौं तव पद वारहिं वारा॥ पूरनकाम राम अनुरागी॥ तुम्ह सम तात न कोउ बडभागी॥ सं
त विटप सरिता गिरि धरनी॥ परहित हेत सवन्ह के करनी॥ संत हृदय नवनीत समाना॥ कहा क
विन्ह परि कहै न जाना॥ निज परिताप द्रवै नवनीता॥ पर दुष द्रवहिं सु संत पुनीता॥ जीवन ज
न्म सुफल मम भएउ॥ तव प्रसाद संसय सव गएउ॥ जानेहु सदा मोहि निज किंकर॥ पुनि

उ०
छु

पुनि उमाकहहुबिहंगवर॥दोहा॥ः नाइसुचरनसिरनाइकरिप्रेमसहितमतिधीर॥गरउ
रुडबैकुंठतबहृदयराखिरघुबीर॥ गिरिजासंतसमागमसमनलाभकछुआन॥बिनुहरिकृ
पानहोइसोगावहिंबेदपुरान॥१२७॥ कहेउपरमपुनीतइतिहासा॥सुनतश्रवनछूटहिंभव
पासा॥प्रनतकल्पतरुकरुनापुंजा॥ उपजैप्रीतिरामपदकंजा॥मनक्रमबचनजनितअघजा
ई॥सुनहिंजेकथाश्रवनमनलाई॥तीर्थाटनसाधनसमुदाई॥जोगबिरागग्याननिपुनाई॥ना
नाकर्मधर्मब्रतदाना॥संजमदमजपतपमखनाना॥भूतदयाद्विजगुरसेवकाई॥ बिद्याबिनय
बिबेकबडाई॥जहलगिसाधनबेदबखानी॥सबकरफलहरिभक्तिभवानी॥सोरघुनाथभ
क्तिश्रुतिगाई॥रामकृपाकाहूएकपाई॥दोहा॥ः मुनिदुर्लभहरिभक्तिनरपावहिंबिनहिंप्र
यास॥जेयहकथानिरंतरसुनहिंमानिबिस्वास॥१२८॥सोइसर्बग्यगुनीसोइग्याता॥सोइम

छु

हिमंडितपंडितदाता॥ धर्मपरायनसोइकुलत्राता॥ रामचरनजाकरमनराता॥ नीतिनिपुनसो
इपरमसयाना॥ श्रुतिसिद्धांतनीकतेहिजाना॥ सोइकविकोविदसोरनधीरा॥ जोछलछाडिभजै
रघुवीरा॥ धन्यदेससोजहंसुरसरी॥ धन्यनारिपतिव्रतअनुसरी॥ धन्यसोभूपुनीतिजोकरई॥ धन्य
सोद्विजनिजधर्मनटरई॥ सोधनधन्यप्रथमगतिजाकी॥ धन्यपुन्यरतमतिसोइपाकी॥ धन्यघरी
सोइजबसतसंगा॥ धन्यजन्मद्विजभक्तिअभंगा॥ दोहा॥ सोकुलधन्यउमासुनुजगतपूज्यसु
पुनीत॥ श्रीरघुवीरपरायनजेहिनरउपजविनीत॥ १२७॥ मतिअनुरूपकथामैंभाषी॥ जद्य
पिप्रथमगुप्तकरिराषी॥ तवमनप्रीतिदेषिअधिकाई॥ तवमैंरघुपतिकथासुनाई॥ यहनक
हियसठहीहठसीलहि॥ जोमनलाइनसुनहरिलीलहि॥ कहियनलोभिहिक्रोधिहिकामि
हि॥ जोनभजैसचराचरस्वामिहि॥ द्विजद्रोहिहिनसुनाइयकवहूं॥ सुरपतिसरिसहोइनृपजवहूं

उ०
रा
यह॥ रामकथा के ते अधिकारी॥ जिन्ह के सत संगति अति प्यारी॥ गुरपद प्रीति नीति रत जेई।
द्विज सेवक अधिकारी तेई॥ ता कहँ यह विसेषि सुषदाई॥ जाहि प्रान प्रिय श्रीरघुराई॥ दोहा॥
राम चरन रति जो चह अथवा पद निर्बान॥ भाव सहित सो यह कथा करौ श्रवन पुट पान॥ १२८॥
रामकथा गिरिजा मैं बरनी॥ कलिमल समनि मनोमल हरनी॥ संसृति रोग सजीवनि मूरी॥
रामकथा गावहिं श्रुति सूरी॥ एहि महँ रुचिर सप्त सोपाना॥ रघुपति भक्ति केर पंथाना॥ अति
हरि कृपा जाहि पर होई॥ पाँव देइ एहि मारग सोई॥ मन कामना सिद्धि नर पावा॥ जे यह कथा
कपट तजि गावा॥ कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं॥ ते गोपद इव भवनिधि तरहीं॥ सुनि सब क-
था हृदय अति भाई॥ गिरिजा बोली गिरा सुहाई॥ नाथ कृपा मम गत संदेहा॥ राम चरन उपजेउ
नव नेहा॥ दोहा॥ मैं कृतकृत्य भइउँ अब तव प्रसाद विस्वेस॥ उपजी राम भक्ति दृढ बीते सकल रा

लवलेस॥१२९॥यहसुभसंभुउमासंवादा॥सुषसंपादनसमनविषादा॥भवभंजनगंजनसंदे
हा॥जनरंजनसज्जनप्रिययेहू॥रामउपासकजेजगमाहीं॥यहसमप्रियतिन्हकेकछुनाहीं॥र
घुपतिकृपाजथामतिगावा॥मैंयहपावनचरितसुहावा॥यहिकलिकालनसाधनदूजा॥जोगजग्य
जपतपब्रतपूजा॥रामहिसुमिरियगाइयरामहि॥संततसुनियरामगुनग्रामहि॥जासुपतितपा
वनवडवाना॥गावहिकविश्रुतिसंतपुराना॥ताहिभजियमनतजिकुटिलाई॥रामभजेगतिके
हिनहिपाई॥छंद॥ पाईनगतिकेहिपतितपावनरामभजिसुनुसठमना॥गनिकाअजामिल
व्याधगीधगजादिषलतारेघना॥आभीरजमनकिरातषसस्वपचादिअतिअघरूपजे॥कहिनाम
वारकजेपिपावनहोहिंरामनमामिते॥रघुवंसभूषनचरितयहनरकहहिंसुनहिंजोगावहीं॥क
लिमलमनोमलधोइविनुश्रमरामधामसिधावहीं॥सतपंचचौपाईमनोहरजानिजोनरउरध

उ०
६६५

रे॥ दासहूनअविद्यापंकजनितविकारश्रीरघुबरहरे॥ सुंदरसुजानकृपानिधानअनाथपरक
रप्रीतिजो॥ सोएकरामअकामहिततनिर्बानप्रदसमआनको॥ जाकीकृपालवलेसतेमतिमं
दतुलसीदासहूं॥ पायोपरमविश्रामरामसमानप्रभुनाहींकहूं॥ दोहा॥ मोसमदीननदीन
हिततुम्हसमानरघुवीर॥ असविचारिरघुवंसमनिहरहुविषमभवभीर॥ कामिहिनारिपि
आरिजिमिलोभिहिप्रियजिमिदाम॥ तिमिरघुनाथनिरंतरप्रियलागहुमोहिराम॥१३१॥
इतिश्रीरामचरित्रमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेविमलवैराग्यसंपादिनोनामसप्तमः
सोपानःसमाप्तः शुभमस्तु संवत् १९८९ चैत्रशुक्लषष्ठम्यां॥ यत्पूर्वंप्रभुणाकृतंसुकविना
श्रीशंभुनादुर्गमं॥ श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशंप्राप्त्यैतुरामायणम्॥ मत्वातद्रघुनाथ
नामनिरतंस्वांतस्तमः॥ शांतयेभाषाबद्धमिदंचकारतुलसीदासस्तथामानसम्॥१॥ पुण्यं ६६५

संदा१

६५ ॐ पापहरंशिवकरंविज्ञानभक्तिप्रदंमायामोहमलापहंसुविमलंप्रेमांबुपूरंशुभम॥श्रीमद्रा
मचरित्रमानसमिदंभक्त्यावगाहंतियेतेसंसारपतंगघोरकिरणैर्दह्यंतिनोमानवाः॥४॥

उत्तरकांडः समाप्तः ९५